ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जुलाई-२०१६

जुलाई-२०१६ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

## शत्रु राष्ट्र से रक्षा करना
## शासक का है पहला काज
## देश के हित में जान गंवाना
## सैन्य धर्म की है आवाज
## सत्यार्थप्रकाश का राजधर्म
## है प्रासंगिक आज

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५५

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| | |
|---|---|
| संरक्षक - ११००० रु. | $ 1000 |
| आजीवन - १००० रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय - ४०० रु. | $ 100 |
| वार्षिक - १०० रु. | $ 25 |
| एक प्रति - १० रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
आषाढ़ शुक्ल तृतीया
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

July- 2016


विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | २००० रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | १००० रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | ७५० रु. |


समाचार २३

हलचल २४


| | |
|---|---|
| ०४ | वेद सुधा |
| ०५ | कल आज और कल |
| १० | हिंसा और असभ्यता का व्यापार |
| १४ | सत्यार्थ प्रकाश और नवलखा महल |
| १६ | हमारा गौरव और विदेशी षड्यंत्र |
| १७ | सत्यार्थप्रकाश पहेली- ७/१६ |
| १८ | वस्त से वैस्ट (west) तक |
| २० | घड़ियाली आँसू |
| २१ | प्रेरणा- लुई पास्चर |
| २२ | सर उसका सहला देना |
| २५ | ये तो बड़ी ही अच्छी बात है |
| २६ | चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती |
| ३० | एकतंत्र शासन के दोष |



स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०२

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## सत्य पर चलें !

**अप्रतीतो जयति सं धनानि प्रतिजन्यान्युत या सजन्या।**
**अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः।।** - ऋग्वेद ४/५०/६

ऋषिः वामदेवः।। देवता-बृहस्पति।। छन्दः-निचृत्त्रिष्टुप्।।

पीछे कदम न हटाने वाला मनुष्य ही विजय प्राप्त करता है। ऐसा ही मनुष्य विजयी होकर ऐश्वर्यों को पाता है। प्रति-जन से संबंध रखने वाले वैयक्तिक ऐश्वर्य तथा जन-समूह से संबंध रखने वाला सामाजिक व राष्ट्रीय ऐश्वर्य उन्हीं जनों या जनसमूहों को प्राप्त होते हैं जिनमें चिरकाल तक लगातार उद्योग करते जाने की शक्ति होती है; जिनमें लगन, धैर्य होता है; जिनमें अड़े रहने, डटे रहने का गुण होता है; जो कभी कदम पीछे हटाना नहीं जानते। जिनमें यह गुण नहीं है ऐसे व्यक्ति या राष्ट्र के लिए संसार में कोई ऐश्वर्य नहीं है, अतः हे व्यक्तियों! तुम धैर्य रखना सीखो; हे राष्ट्रो! तुम मिलकर अन्त तक डटे रहना सीखो।

परन्तु इसका दूसरा पार्श्व भी है। डटे रहना, अन्याय के विरुद्ध और न्याय के लिए ही चाहिए, परन्तु प्रायः दुनिया के सब सत्ताधारी मनुष्य स्वार्थवश हो अन्याय के लिए भी डटे रहते हैं। ऐसे डटे रहनेवालों का तो- वे चाहे कितने ही बड़े शक्तिशाली हों- विनाश ही होता है। जगत् के संचालक देव लोग तो उसी सत्ताधारी राजा की रक्षा करते हैं जो न्याय के लिए झुकने वाला होता है, जो सत्य उपदेश देने वाले की बात को नम्रता से सुनता है, अड़ता नहीं है, अतएव ऐसा संरक्षण चाहनेवाले सच्चे ब्राह्मणों की सदा पूजा किया करता है। सत्ताधरी लोग यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे सांसारिक कोई सत्ता न रखनेवाले, सबका भला और रक्षण चाहनेवाले, नम्र, ज्ञानी पुरुष उन्हें आकर जो कुछ सुझावें उसे वे सत्कार-पूर्वक सुनें और उनकी शुभ सम्मति को तुरन्त पूरा करें।

> **"मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। - महर्षि दयानन्द सरस्वती"**

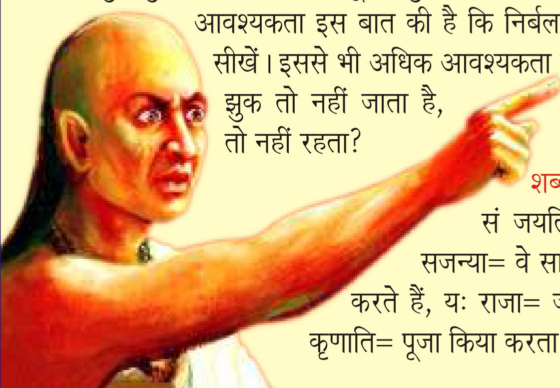

आवश्यकता इस बात की है कि निर्बल और पद-दलित लोग सत्य पर अड़ना सीखें और सत्ताधारी लोग नमना सीखें। इससे भी अधिक आवश्यकता यह है कि प्रत्येक मनुष्य सदा देखे कि वह कहीं बलवान्, अन्यायी के सामने झुक तो नहीं जाता है, कदम पीछे तो नहीं हटा लेता और असत्ताधरी सच्चे पुरुष के सामने अड़ा तो नहीं रहता?

शब्दार्थ- अ+प्रति+इतः= पीछे कदम न हटाने वाला ही, धनानि= ऐश्वर्यों को, सं जयति= जीतता है, वे ऐश्वर्य चाहे प्रति-जन्यानि= वैयक्तिक हों अथवा या सजन्या= वे सामूहिक हों और देवाः= देव, तम्= उस, सत्ताधारी राजा की अवन्ति= रक्षा करते हैं, यः राजा= जो राजा, अवस्यवे= रक्षा चाहनेवाले, ब्राह्मणे= सच्चे ब्राह्मणों की, वरिवः कृणाति= पूजा किया करता है, उनके आगे झुकता है।

**- आचार्य अभय देव विद्यालंकार**
**( साभार- वैदिक विनय )**

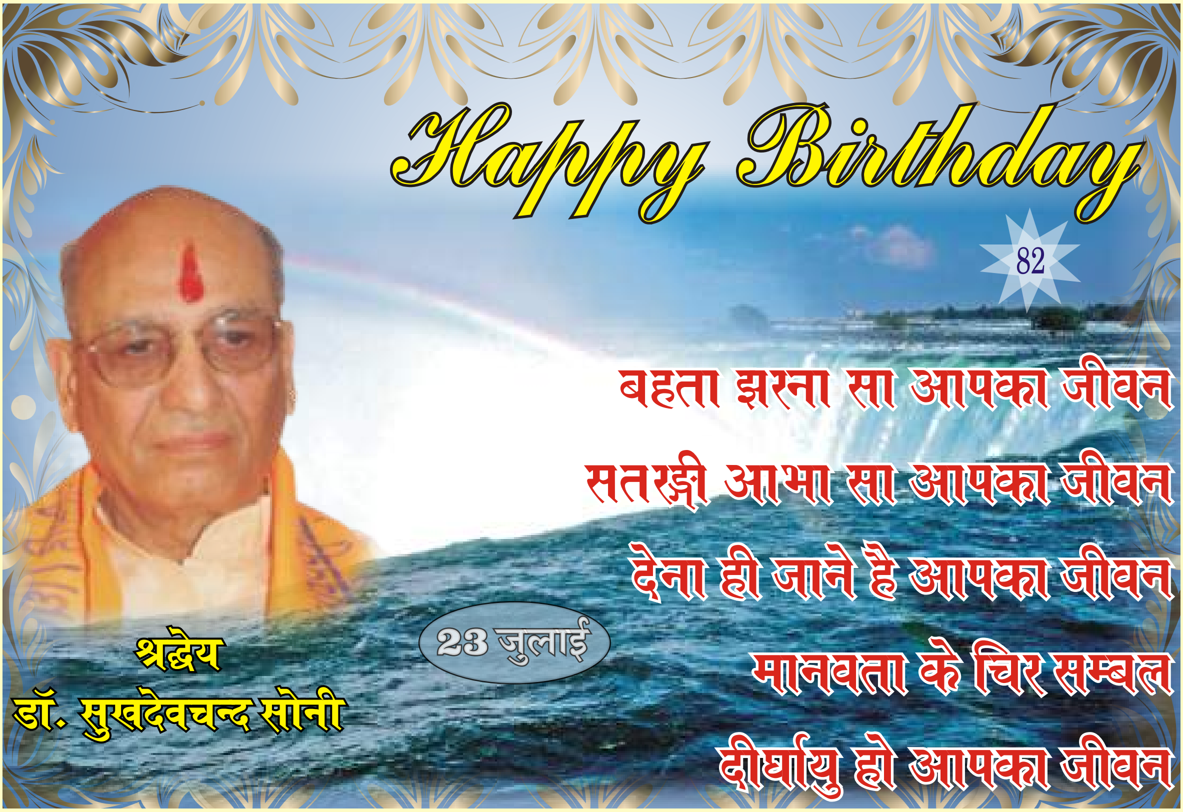


महायज्ञ आर्य समाज, शिकागोलैण्ड

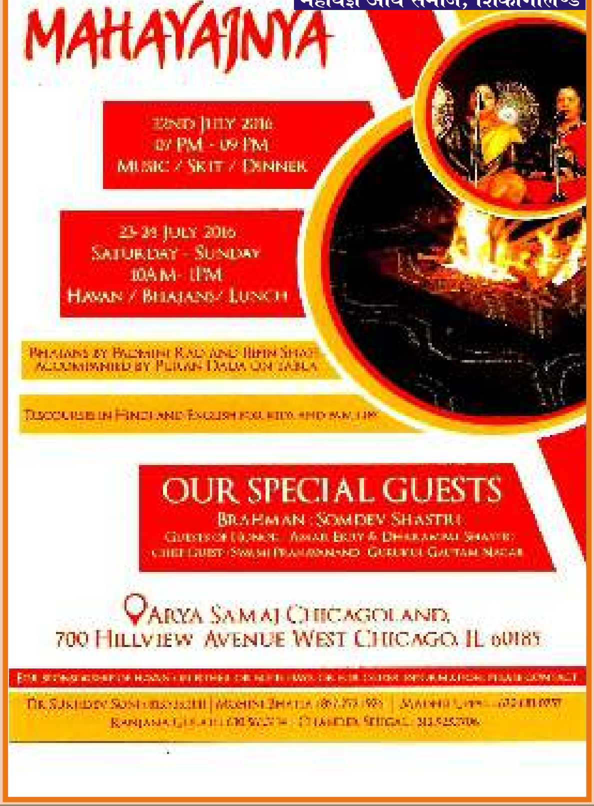


# कल आज और कल

अरे छोड़ो बातें कल की,
सुनो सुनाओ आज की।
इस कल-कल के चक्कर में,
न इनकी सुनी न आपकी।
बीता कल सो भूत बन गया,
आने वाला कल इक सपना है।
पल-पल में जो बीत रहा वो, आज ही केवल अपना है।
कल उसने ऐसा बोला था, कल मैं भी वैसा बोलूँगा।
जितना जहर था उसने घोला, उससे ज्यादा मैं घोलूँगा।
रिश्ते-नातों का ये मटका, ऐसे ही हाथ से फिसल जाता है।
कल का बदला कल कैसे लेंगे,
यही षड्यंत्र रचते आज निकल जाता है।
हो सकता है कल रहे न रहे जो आज है तेरे सामने,
उठ पकड़ हाथ उसका अभी, छोड़ दे कल के ताने बाने।
चक्की के दो पाट हैं ये, आने वाला और बीता कल।
पिस के रह जायेगा आज इसी में,
फिर न रहेगा तेरा कल, मेरा कल।
अरे छोड़ो बातें कल की .........

आत्म निवेदन

# तुम भूल न जाओ उनको इसलिए कही ये कहानी

> **उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता**
> **जिस मुल्क की सरहद की निगेबान हैं आँखें**

इन पंक्तियों को भारतीय सेना के जांबाज सैनानियों ने कारगिल युद्ध में चरितार्थ करके दिखा दिया। यद्यपि यह निगेवानी शायद कुछ सुस्त पड़ गयी थी तभी पाकिस्तानी सैनिकों को नियंत्रण रेखा का अतिक्रमण कर काफी दूर आने का अवसर मिल गया।

कारगिल जम्मू कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र का एक जिला है जो कि नियंत्रण रेखा के बिल्कुल पास है। पाक अधिकृत क्षेत्र के बटालिक क्षेत्र इसके उत्तर में सटे हुए हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग १ डी जो काश्मीर को लेह से जोड़ता है कारगिल से गुजरता है। यह सड़क मार्ग सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कारगिल, ड्रास तथा बटालिक क्षेत्र की फैली हुयी १७००० फीट ऊँची पर्वत चोटियाँ इसी कारण सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। पाकिस्तानी मनःस्थिति से कौन परिचित नहीं है। मौका मिलते ही दंश मारने हेतु सर उठाना पाकिस्तानी सेना तथा आई.एस.आई. का प्रमुख कार्य हो गया है। इस हमले के सन्दर्भ में पाकिस्तान सरकार की स्वयं को निर्लिप्त बताने की कोशिश रही। परन्तु जब पाकिस्तान के सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की उसके अधीनस्थ से हो रही बातचीत को इंटरसेप्ट कर लिया गया और युद्ध क्षेत्र से पाकिस्तानी सेना के इन्वाल्वमेंट के सबूत मिले तो पाकिस्तान का चेहरा सब के सामने स्पष्ट हो गया ।

> **"Spare a moment for the uninformed heros who gave their today for our tomorrow"**

१९९८-९९ में गुपचुप रूप से नियंत्रण रेखा के पार भारतीय इलाके में पाकिस्तान ने घुसपैठ प्रारम्भ कर दी। ३ मई १९९९ को स्थानीय निवासियों ने दुश्मन की इस हलचल को देखा तथा सम्बंधित अधिकारियों को इसकी सूचना दी। ५ मई को

भारतीय सेना ने विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से एक पेट्रोलिंग टीम भेजी। इस टीम का नेतृत्व सौरभ कालिया कर रहे थे जिन्हें सेना में आये अभी एक महीना ही हुआ था। उम्र केवल २३ वर्ष। सौरभ के एक अन्य साथी की उम्र मात्र १८ वर्ष थी। दुश्मन ने इस टीम के कमांडर सौरभ तथा इसके पाँच सदस्यों को पकड़ २२ दिनों तक अमानवीय यातनाएँ देकर उनके क्षत-विक्षत शरीर फेंक दिए। उनको पहचानना भी कठिन था। पाकिस्तानी सेना द्वारा प्रताड़ना के समय इनके कानों को गर्म लोहे की रॉड से छेदा गया, आँखें फोड़ दी गयीं और निजी अंग काट दिए गए। यह अंतर्राष्ट्रीय युद्धबंदी नियमों के विरुद्ध व

क्रूरता की पराकाष्ठा थी पर वो पाकिस्तान ही क्या जो नैतिकता का पालन करे।

९ जून को पाकिस्तान की ओर से बाकायदा भारी आक्रमण कर दिया गया। भारतीय सेना ने 'आपरेशन विजय' के अंतर्गत अभियान छेड़ पाकिस्तानियों को खदेड़ कर अपने इलाके वापस लेने का अभियान चलाया जो कि २६ जुलाई १९९९ को सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इस युद्ध में भारतीय सेना को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। मुख्य वजह दुश्मन के ऊँचाई पर होना तथा वहाँ से उसको सब हलचल स्पष्ट दिखायी देना तथा मार करने के लिए भी अत्यधिक उपयुक्त 'लोकेशन' का होना था। पर सही कहा है कि युद्ध हथियार तथा अनुकूलता से नहीं वरन हौंसलों से जीते जाते हैं। और हौंसलों के मामले में भारतीय सेना की स्थिति सभी जानते हैं। जब प्राणों की बाजी लगा देने की होड़ लगी हो तो विजयश्री क्योंकर दूर रह सकती है।

कैप्टन अमोल कालिया ने दर्जनों घुसपैठियों को मार गिराया था। वे स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। कमांड की ओर से आदेश दिया गया कि वे वापस लौट आयें। कालिया अगर अपनी जान बचाना चाहते तो वापस लौट सकते थे पर यहाँ जान की परवाह किसको थी। वे डटे रहे। और चौकी नंबर ४१९२ पर तिरंगा फहरा कर शहीद हो गए।

३ जुलाई को कमांडिंग आफिसर कर्नल कुशल ठाकुर के नेतृत्व में १८ ग्रेनेडियर को टाइगर हिल पर कब्जा करने का आदेश मिला। इसके लिए पूरी बटालियन को तीन कंपनियों- 'अल्फा', 'डेल्टा' व 'घातक' कम्पनी में बाँटा गया। 'घातक' कम्पनी में ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव सहित ७ कमांडो शामिल थे। ४ जुलाई की रात में पूर्व निर्धारित योजनानुसार कुल २५ सैनिकों का एक दल टाइगर हिल की ओर बढ़ा। चढ़ाई सीधी थी और कार्य काफी मुश्किल। टाइगर हिल में घुसपैठियों की तीन चौकियाँ बनीं हुई थीं। एक मुठभेड़ के बाद पहली चौकी पर कब्जा कर लिया गया। इसके बाद केवल ७ कमांडो वाला दल आगे बढ़ा। यह दल अभी कुछ ही दूर आगे बढ़ा था कि दुश्मन की ओर से अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ हो गयी। इस गोलीबारी में दो सैनिक शहीद हो गए। इन दोनों शहीदों को वापस छोड़कर शेष ५ जांबाज सैनिक आगे बढ़े। किन्तु एक भीषण मुठभेड़ में इन पाँचों में से चार शहीद हो गए और बचे केवल ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव। हालांकि वह बुरी तरह घायल हो गए थे, उनकी बाएँ हाथ की हड्डी टूट गई थी और हाथ ने काम करना बन्द कर दिया था। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। योगेन्द्र सिंह ने हाथ को बेल्ट से बाँधकर कोहनी के बल चलना आरंभ किया। इसी हालत में उन्होंने अपनी ए.के.-४७ राइफल से १५-२० घुसपैठियों को मार गिराया। इस तरह दूसरी चौकी पर भी भारत का कब्जा हो गया। अब उनका लक्ष्य १७,५०० फुट की ऊँचाई पर स्थित चौकी पर कब्जा करना था। अतः वह धुआंधार गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े, जिससे दुश्मन को लगने लगा कि काफी संख्या में भारतीय सेना यहाँ पहुँच गई है। कुछ दुश्मन भाग खड़े हुए, तो कुछ चौकी में ही छिप गए, किन्तु ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव ने अपने अद्‌भुत साहस का परिचय देते हुए शेष बचे घुसपैठियों को भी मार गिराया और तीसरी चौकी पर कब्जा जमा लिया। इस संघर्ष में वह और अधिक घायल हो गए पर अपनी जांबाजी से अंततः योगेन्द्र सिंह यादव टाइगर हिल पर तिरंगा फहराने में सफल रहे। इसी बीच उन्होंने पाकिस्तानी कमाण्डर की आवाज सुनी, जो अपने सैनिकों को ५०० फुट नीचे भारतीय चौकी पर हमला करने के लिए आदेश दे रहा था। इस हमले की जानकारी अपनी चौकी तक पहुँचाने के लिए योगेन्द्र सिंह यादव ने अपनी जान की बाजी लगाकर पत्थरों पर लुढ़कना आरंभ किया और अंततः जानकारी देने में सफल रहे। उनकी इस जानकारी से भारतीय सैनिकों को काफी सहायता मिली और दुश्मन दुम दबाकर भाग निकले। योगेन्द्र सिंह यादव के जख्मी होने पर यह भी खबर फैली थी कि वे शहीद हो गए, पर जो देश की रक्षा करता है, उसकी रक्षा स्वयं ईश्वर ने ही की। योगेंद्र सिंह यादव के शरीर पर पाकिस्तानी सैनिकों की १९ गोलियाँ लगी थीं। उन्हें मिलिट्री हास्पिटल ले जाया गया। करीब एक साल के बाद योगेन्द्र पूरी तरह से स्वस्थ हुए।

## ''ये दिल माँगे मोर''

०४ जून १९९९ को कैप्टन बत्रा की टुकड़ी को कारगिल युद्ध में भेजा गया। हम्प व राकी नाब जीतने के बाद विक्रम को कैप्टन बना दिया गया। श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्त्वपूर्ण ५१४० चोटी को पाक सेना से मुक्त करवाने का जिम्मा भी कैप्टन विक्रम बत्रा को दिया गया। बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बावजूद विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ २० जून १९९९ को इस चोटी पर भारत का तिरंगा लहरा दिया। इसी चोटी पर बत्रा ने 'ये दिल मांगे मोर' स्लोगन बोला था।

इसके बाद उन्होंने चोटी ४८७५ को भी कब्जे में लेने का अभियान शुरू कर दिया। मिशन लगभग पूरा हो चुका था। कैप्टन चाहते तो वापस लौट सकते थे। पर उनके अधीनस्थ लेफ्टीनेंट नवीन के दोनों पैर बुरी तरह घायल हो गए थे। अगर बत्रा उन्हें अपने हाल पर छोड़ देते तो अपनी जान बचा सकते थे। पर भारतीय मिट्टी में ऐसे कायर पैदा ही नहीं होते। आत्मोत्सर्ग के जुनून से बत्रा सराबोर थे। वे नवीन को बचाने गए और वीर गति को प्राप्त हो गए।

तोलोलिंग से दुश्मन को खदेड़ने का भार राजपूताना राइफल्स के जिम्मे आया। केवल २२ वर्ष के मेजर विजयंत थापर इस टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। विजयंत थापर ने शौर्य की ऐसी मिसाल रच दी की सहस्राब्दियों तक भुलाई न जा सके। भारत माँ के लाडले सपूत राष्ट्ररक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग के लिए किस प्रकार उत्सुक रहते हैं यह विश्व के लिए आश्चर्य का विषय है।

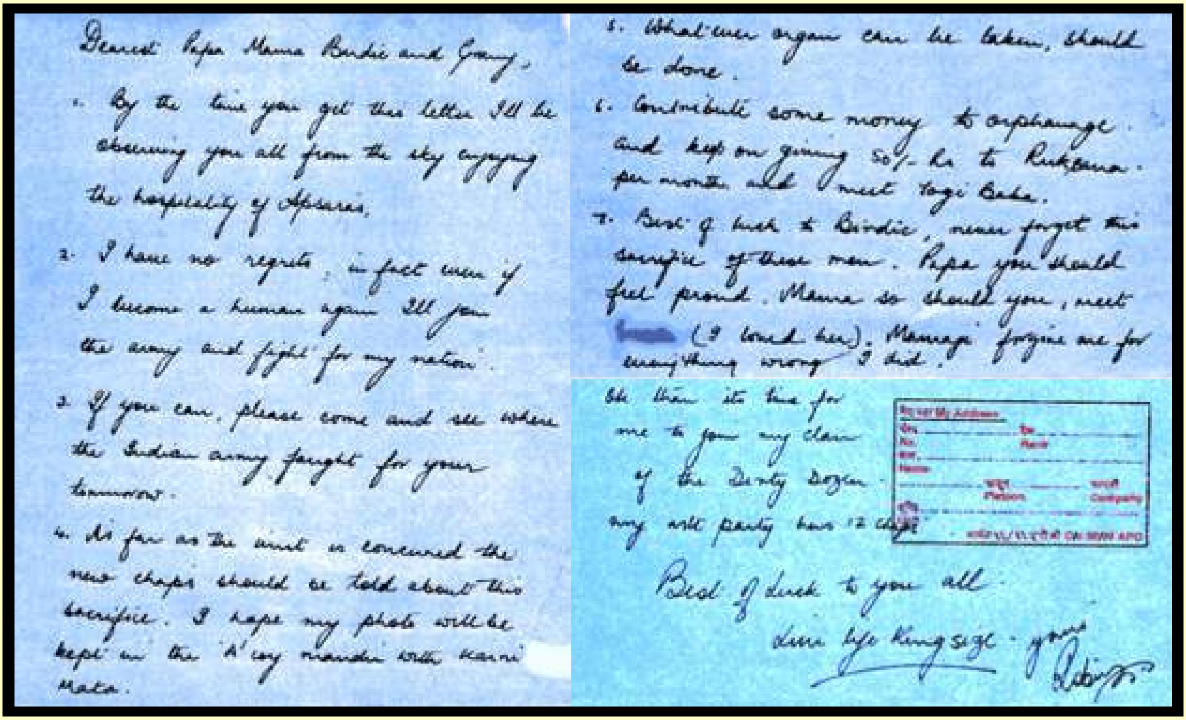
Dearest Papa Mama Birdie and Granny,

1. By the time you get this letter I'll be observing you all from the sky enjoying the hospitality of Apsaras.

2. I have no regrets, in fact even if I become a human again I'll join the army and fight for my nation.

3. If you can, please come and see where the Indian army fought for your tomorrow.

4. As far as the unit is concerned the new chaps should be told about this sacrifice. I hope my photo will be kept in the 'A' coy mandir with Karni Mata.

5. Whatever organ can be taken, should be done.

6. Contribute some money to orphanage and keep on giving 50/- Rs to Rukhsana per month and meet Yogi Baba.

7. Best of luck to Birdie, never forget this sacrifice of these men. Papa you should feel proud. Mama so should you, meet (I loved her). Mamaji forgive me for everything wrong I did.

Ok then its time for me to join my clan of the Dirty Dozen. My asslt party has 12 chaps.

Best of luck to you all.

Live life King size.

Yours
Robin

थापर जानते थे कि यह मौसम प्राण न्योछावर करने का है अतः पहले ही अपने पिता के नाम पत्र लिख दिया। उस पत्र को पढ़कर कौन-सी ऐसी आँख है जो नम न हो जाय और कौन-सा ऐसा भारतीय सीना है जो गर्व से चौड़ा न हो जाय।

विजयंत के पिता स्वयं सेना में कर्नल थे तथा चाचा वायु सेना में फाइटर प्लेन के पायलट थे। विजयंत भी प्रारम्भ से ही सेना में जाना चाहते थे। वे डी.ए.वी स्कूल चंडीगढ़ के विद्यार्थी भी रहे। वाटर पोलो के माहिर खिलाड़ी थे। उसमें उन्होंने स्वर्ण पदक जीता, मिलिट्री अकादमी में सिल्वर मैडल।

तोलोलिंग की चोटी पर विजय प्राप्त करने की भारतीय सेना की पूर्व कोशिशें दुर्भाग्य से नाकाम हो गयीं थीं। अब विजयंत की टुकड़ी को यह जिम्मेदारी सौपी गयी। १२ जून १९९९ की रात को पहले विजयंत थापर की टुकड़ी ने एक पाकिस्तानी चौकी से दुश्मनों को खदेड़कर उसपर अधिकार किया उसके बाद तोलोलिंग को विजित किया। विशेषज्ञ इस जीत को कारगिल युद्ध का टर्निंग पाइंट मानते हैं। इसके बाद कैप्टन विजयंत थापर को तोलोलिंग तथा टाइगर हिल के बीच की 'थ्री पिम्पल' को जीतने की जिम्मेदारी दी गयी। वो पूर्णिमा की रात थी, दुश्मन ऊँचाई पर था, वह हर प्रकार से अधिक सुविधाजनक स्थिति में था, १५००० फीट तक लगभग सीधी चढ़ाई थी, तापमान -१५ था। यह एक असंभव नहीं तो अत्यधिक कठिन कार्य अवश्य था। जब विजयंत को अपने ऑफीसर मेजर पी.आचार्य के वीरगति प्राप्त करने का समाचार मिला तो विजयंत अपने एक साथी नायक तिलक सिंह के साथ एकदम आगे बढ़े और केवल १५ मीटर की दूरी से दुश्मन पर भारी गोलीबारी की। जब डेढ़ घंटे में कोई नतीजा नही निकला तो विजयंत सीधा दुश्मन को ललकार कर आगे बढ़े। पहले से ही विजयंत के हाथ और पेट में गोलियाँ लगीं थीं, पर अपने जवान ऑफीसर का यह साहस देख पूरी टुकड़ी में उत्साह संचरित हो गया और देखते ही देखते

'नाल' पर अधिकार कर लिया गया, परन्तु कैप्टन विजयंत थापर के रूप में एक और जांबाज ने राष्ट्र हेतु अपने प्राण उत्सर्ग कर दिए।

युद्ध के मोर्चे पर दुश्मन के छक्के छुड़ाते हुए अपने प्राणों की बलि देने वाले जवानों की सूची बड़ी लम्बी है, जिन्होंने राष्ट्र की उत्कृष्ट शौर्य परम्परा को जीवन्त किया। इस युद्ध में हमें बहुत नुकसान सहना पड़ा जिसके घाव कभी भर नहीं सकते। ५०० वीरों ने वीरगति प्राप्त की। १००० से अधिक जवान घायल हुए। अधिकांश की आयु ३० वर्ष से भी कम थी ।

यहाँ यह भी जान लेना उचित है कि भारतीय वायु सेना ने 'आपरेशन सफेद सागर' के नाम से आपरेट कर एक इतिहास रच दिया। मिलिट्री एविएशन के इतिहास में यह प्रथम बार था जब ३२००० फीट की ऊँचाई पर भारतीय रणबांकुरों ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया। २४ मई को भारतीय वायु सेना को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि १६८ किलोमीटर लम्बी नियंत्रण रेखा को पार कर भारतीय क्षेत्र में घुसे सभी घुसपैठियों को खदेड़े पर नियंत्रण रेखा का उल्लंघन न करे। प्रारम्भ में जब वायु सेना को शत्रु के दूर-दूर फैले छोटे-छोटे टेंट्स तथा ऐसे ही ठिकानों की जानकारी नहीं थी तब तक अपेक्षित सफलता नहीं मिली। दुश्मन के हमलों से बचने के लिए २५००० से २८००० फीट ऊपर रहने का निर्णय किया गया पर वायु सेना के जांबाजों की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। जब लेजर बम डालने का निर्णय लिया गया तो हमारे जवान अधिक प्रशिक्षित नहीं थे, परन्तु एक सप्ताह से कम समय में उन्होंने महारथ हासिल कर ली, जब इन बमों के फ्यूज नहीं थे तो पिस्टल के फ्यूज से काम लिया। अंततोगत्वा सफलता का परचम फहराया।

भारतीय सेना ने ४ जुलाई को ड्रास तथा ६ जुलाई को बटालिक क्षेत्र में जुबार हाइट्स पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। १२ जुलाई को प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने आधिकारिक रूप से आपरेशन विजय की सफलता की घोषणा की।

भारतीय जांबाजों की बहादुरी की यह चमत्कृत कर देने वाली जानकारी आज भी प्रत्येक भारतीय का सर गर्व से ऊँचा करने में सक्षम है, पर हमारे नेता लोगों का क्या करें, इस गौरवपूर्ण इतिहास के साथ कुछ शर्मनाक भी जुड़ गया। सबसे पहले फौजियों के शवों को लाने के लिए जो ताबूत खरीदे गए उसमें घोटाला हुआ। सरकार ने निर्णय लिया कि शहीदों के परिजनों को पेट्रोल पम्प दिए जायेंगे इसमे हेर-फेर हुयी। परिजनों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। एक फिल्म इसी को केंद्र में रखकर बनी। शहीदों की विधवाओं हेतु आदर्श सोसाइटी की परियोजना में क्या कुछ हुआ सारा देश जानता है।

जब-जब कारगिल के युद्ध का जिक्र आएगा गर्व की अनुभूति के साथ शर्मनाक पहलू भी कचोटता रहेगा।

- **अशोक आर्य**
**चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६**

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें
**प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।**

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

**सबसे बड़ा पुण्य है परहित,**
**परहित है सुख का आधार।**
**परहित के पथ पर बढ़ने से,**
**अपना बन जाता संसार॥**

**सत्यार्थ सौरभ**
**घर-घर पहुँचावें**

**सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना**

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

# पवित्र यज्ञ या हिंसा और असभ्यता का व्यापार

कर्मकाण्डिक व्याख्यानुसार यजुर्वेद के २२वें से २५वें अध्याय तक अश्वमेध यज्ञ वर्णित हुआ है। यह यज्ञ बहुत विस्तृत है, तथापि उसकी संक्षिप्त रूपरेखा यहाँ प्रस्तुत करते हैं। अश्वमेध का अधिकार अभिषिक्त राजा को ही है। वह अपनी चार पत्नियों महिषी, वावाता, (बल्लभा), परिवृक्ता (अबल्लभा) और पालागली (दूतपुत्री) को साथ लेकर यज्ञ आरम्भ करता है। चारों पत्नियों के साथ उनकी सौ-सौ अनुचरियाँ होती हैं। राजा चारों ऋत्विज् होता, अध्वर्यु, ब्रह्मा तथा उद्गाता का वरण करता है। एक ऐसा घोड़ा लाया जाता है, जिसका अगला हिस्सा काला और पिछला हिस्सा सफेद हो, ललाट पर शकटाकार तिलक बना हो, जो बहुत मूल्यवान्, अति वेगवान् और ऐसा अद्वितीय हो जिसकी जोट का दूसरा न मिलता हो। अध्वर्यु ब्रह्मा से अनुमति पाकर रस्सी से घोड़े को बाँधता है। उस घोड़े को तालाब के स्थावर जल के बीच ले जाकर स्नान कराता है। वहीं आयोगव पुरुष (शूद्र से वैश्या में उत्पन्न संतान) के हाथ से एक चार आँखों वाले (अर्थात् जिसकी दो आँखें तथा उनके ऊपर दो आँख-जैसे चिह्न हों ऐसे) कुत्ते को मूसल से मरवा कर बेंत की चटाई पर रखकर

**परो मर्त्तः परः श्वा ......l** - यजु. २२/५

का पाठ कर घोड़े के नीचे से तालाब में प्रवाहित कर देता है। वहाँ से वह घोड़े को अग्नि के समीप लाकर अग्नि में आहुतियाँ देता है।

इसके पश्चात् अध्वर्यु तथा यजमान घोड़े को विहार करने के लिए अन्य १०० घोड़ों के साथ ईशान दिशा में छोड़ देते हैं। साथ में कवच, खड्ग, दण्ड आदि लिये हुये १०० सैनिक रक्षार्थ भेजे जाते हैं। उन्हें आदेश दिया जाता है कि वे एक वर्ष तक घोड़े को भ्रमण कराते रहें और दिग्विजय करके लौटें। एक वर्ष के पश्चात् जब घोड़ा लौटकर आता है तब अन्य तीन घोड़ों सहित उसे एक रथ में नियुक्त कर अध्वर्यु और यजमान रथ में बैठ, तालाब पर ले जाकर घोड़ों को जल में प्रविष्ट कराते हैं। वहाँ से घोड़े को देवयजन स्थान में लाते हैं। उस समय महिषी, वावाता तथा परिवृक्ता ये तीनों पत्नियाँ क्रमशः घोड़े के अगले, बीच के तथा पिछले शरीर की मालिश करती हैं। फिर वे ही तीनों उस घोड़े के सिर तथा पूँछ में १०१-१०१ सुवर्ण मणियाँ बाँधती हैं। इसके बाद ब्रह्मा और होता

**कः स्विदेकाकी चरति .........l** - यजु. २३/९-१२

इन चार मंत्रों से परस्पर प्रश्नोत्तर करते हैं। इसके बाद पशुओं को यूप में बाँधा जाता है। २१ यूप होते हैं, जिनमें बीच के अग्निष्ठ यूप में १७ पशु तथा शेष यूपों में से प्रत्येक में १६-१६ पशु बाँधे जाते हैं। ये सब ग्राम्य पशु होते हैं, जिनका बाद में वध करना होता है। इन २१ यूपों के मध्य में जो २० अवकाश होते हैं उनमें से प्रत्येक में कपिंजल आदि १३-१३ आरण्य प्राणी अवस्थित किये जाते हैं। इनका वध अभीष्ट नहीं होता, किन्तु इन्हें बाद में इन-इनके देवताओं के उद्देश्य से उत्सर्ग कर छोड़ दिया जाता है। तत्पश्चात् दरी-चादर बिछाकर उस पर सुवर्ण रखकर घोड़े का संज्ञपन (वध) किया जाता है। राजपत्नियाँ उस मृत घोड़े की तीन-तीन परिक्रमाएँ करती हैं। फिर पत्नियाँ, अध्वर्यु और यजमान मिलकर मृत घोड़े का प्राणशोधन करते हैं। प्राणशोधन के अनन्तर महिषी घोड़े के पास लेट जाती है। अध्वर्यु महिषी तथा घोड़े को चादर से ढक देता है। महिषी मृत घोड़े के लिंग को खींचकर अपनी योनि में डालती है और कहती है कि यह घोड़ा मुझमें वीर्य का आधान करे। इसके अनन्तर अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि ऋत्विज् कुमारी एवं राजपत्नियों से अश्लील हास-परिहास करते हैं।

और वे भी अपनी-अपनी अनुचरियों सहित उन्हें वैसा ही अश्लील उत्तर देती हैं। फिर अध्वर्यु आदि घोड़े के पास लेटी हुई महिषी को वहाँ से उठाकर लाते हैं। महिषी आदि तीनों

राजपत्नियाँ तांबे, चांदी और सोने की सुइयों से मृत घोड़े के शरीर को छेदकर जर्जर करती हैं, जिससे तलवार उसके शरीर में आसानी से प्रविष्ट हो सके। फिर घोड़े के पेट को काटकर उसमें से होम के लिये चर्बी निकाली जाती हैं। यूपों में बंधे अन्य पशुओं को भी काटा जाता है और चर्बी, रक्त तथा शूल पर पकाए हुए मांस का होम किया जाता है। अन्त में राजपत्नियों की जो सौ-सौ अनुचरियाँ थीं, उन्हें ब्रह्मा आदि ऋत्विजों को दक्षिणा में दे दिया जाता है। कर्मकाण्डियों का विश्वास हैं कि घोड़ा पुनर्जीवित होकर स्वर्ग चला जाता है।

**यह विशाल हिन्दू समाज वेद में आस्था रखता है यह निःसंकोच कहा जा सकता है। जिन्होंने वेद को न कभी पढ़ा न सुना वे भी वेद को प्रमाण स्वरूप मानने में संकोच नहीं करते हैं। परन्तु विडम्बना यह है कि सर्वसाधारण की बात तो जाने दीजिए आचार्यों ने भी वेद को माना अवश्य पर जाना नहीं, इसी कारण वेदार्थ करते समय वेदार्थ की प्राचीन शैली का ज्ञान न होने से अर्वाचीन आचार्य सार्थक भाष्य नहीं कर पाए बल्कि कहीं-कहीं तो पूर्णतः निरर्थक, भयावह तथा अश्लील भाष्य उपलब्ध होता है। आचार्य महीधर द्वारा किए कुछ वेदमंत्रों के ऐसे ही भाष्य का एक संक्षिप्त दिग्दर्शन इस लेख में प्रस्तुत है। इस ओर महर्षि दयानन्द का कृतित्व अद्भुत है। आर्य जगत् के प्रख्यात् विद्वान् डा. रामनाथ वेदालंकार ने अश्वमेध प्रकरण (यजुर्वेद के २२वें से २५वें अध्याय) का तुलनात्मक विवरण देते हुए यथार्थ प्रस्तुत किया है। पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है -संपादक**

स्वामी दयानन्द अश्वमेध के इस रूप से सहमत नहीं हैं, न ही इसे वेद व शतपथ ब्राह्मण के अनुकूल समझते हैं। वे

**राष्ट्रं वा अश्वमेधः .......।** - श. १३.१.६.३

यह शतपथ का प्रमाण देते हुये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के राजप्रजाधर्मविषय में लिखते हैं कि-

**'राष्ट्रपालनमेव क्षत्रियाणामश्वमेधाख्यो यज्ञो भवति।**
**नाश्वं हत्वा तदङ्गानां होमकरणं चेति।।**

अर्थात् राष्ट्र का पालन करना ही क्षत्रियों का अश्वमेध यज्ञ है, घोड़े को मारकर उसके अंगों को होम करना नहीं। सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में इस सम्बन्ध में निम्न प्रश्नोत्तर आये हैं-

प्रश्न- यज्ञकर्त्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्गगामी तथा होम करके फिर पशु को जीवित करते थे, यह बात सच्ची है वा नहीं?

उत्तर- नहीं, जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहने वाले को मारके होम कर स्वर्ग में पहुँचाना चाहिए वा उसके प्रिय माता, पिता, स्त्री और पुत्रादि को मारकर होम कर स्वर्ग में क्यों नहीं पहुँचाते? वा वेदी में से पुनः क्यों नहीं जिला लेते हैं?

प्रश्न- जब यज्ञ करते हैं तब वेदों के मंत्र पढ़ते हैं। जो वेदों में न होता तो कहाँ से पढ़ते?

उत्तर- मंत्र किसी को कहीं पढ़ने से नहीं रोकता, क्योंकि वह एक शब्द है। परन्तु उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि पशु को मारके होम करना चाहिए।

अश्वमेध के प्रसंग में आने वाले २३वें अध्याय के ११ से ३१ तक के मंत्रों का महीधरकृत अर्थ अत्यन्त अश्लील है, जिसे लिखते हुए भी लज्जा अनुभव होती है। स्वयं महीधर भी उसे वैसा ही समझते हैं। अतएव उसके बाद ३२वें मंत्र का अर्थ वे करते हैं कि 'अश्व के संस्कार के लिए जो हमने अश्लील भाषण किया है और उससे जो हमारे मुख दुर्गन्धित हो गये हैं उन्हें यज्ञ पुनः सुगन्धित कर देवे।' यदि मुख दुर्गन्धित होने की चिन्ता थी तो अश्लील अर्थ किया ही क्यों? वस्तुतः न उन मंत्रों का अर्थ अश्लील है, न ही इस ३२वें मंत्र का अभिप्राय है वह जो महीधर ले रहे हैं।

स्वामी जी ने अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के भाष्यकरण शंकासमाधानादि विषय में उक्त मंत्रों के महीधरकृत अर्थ देकर फिर शतपथ के वाक्य उद्धृत करते हुए उनके सत्यार्थ प्रकाशित किये हैं। उन्हें पाठक वहीं देखें। स्वामी जी के यजुर्भाष्य में भी उक्त मंत्रों का भाष्य देखना चाहिए। नीचे हम तुलना के लिए अश्वमेध-प्रकरण के कुछ इतर मंत्रों का कर्मकाण्डिक अर्थ तथा स्वामी जी का अर्थ देते हैं।

ऊपर अश्वमेध की विधि में हम देख चुके हैं कि घोड़े को काटने के पश्चात् राजमहिषी मृत घोड़े के पास लेट जाती है, उस प्रसंग का यह मंत्र है-

**प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।**
**अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।**
**ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।** - यजु. २३/१८

महीधर के अनुसार 'प्राणाय स्वाहा' आदि से मृत अश्व का प्राणशोधन करते हैं। फिर घोड़े के पास लेटी हुई महिषी से ईर्ष्या करती हुईं अन्य राजपत्नियाँ परस्पर कहती हैं कि अरी अम्बे, अरी अम्बिके, अरी अम्बालिके! मुझे तो उस घोड़े के

पास कोई ले ही नहीं जाता। वह दुष्ट घोड़ा तो काम्पील नगरवासिनी उस दुष्टा सुन्दरी सुभद्रा के पास लेटा है। पाठक सोचेंगे यह यज्ञ हो रहा है या तमाशा।

अब स्वामी दयानन्द का अर्थ देखिये। उन्होंने 'अश्वकः' का अर्थ अश्व के समान शीघ्रगामी जन, 'सुभद्रिका' का अर्थ सुष्ठु कल्याणकारिणी तथा 'काम्पीलवासिनी' का अर्थ लक्ष्मी किया है-

'अश्वकः अश्व इव गन्ता जनः,सुभद्रिकां सुष्ठुकल्याण कारिकां, काम्पीलवासिनी कं सुखं पीलति बध्नाति गृह्णातीति कंपीलः स्वार्थेऽण्, 'तं वासयितुं शीलमस्यास्तां लक्ष्मीम्'।

सम्पूर्ण मंत्र का अभिप्राय यह लिया है कि हे माता, हे दादी, और हे परदादी, जिस लक्ष्मी को पाकर अश्व के समान शीघ्रगामी मनुष्य भी सो जाता है, निरुद्यमी हो जाता है, वह लक्ष्मी मुझे वश में नहीं करती है, अतः मैं तो प्राण, अपान और व्यान के लिए स्वाहा करता हूँ, अर्थात् पुरुषार्थी होता हूँ। भावार्थ में लिखते हैं-

'धनस्य स्वभावोऽस्ति यत्रेदं संचीयते तान् निद्रालून् अलसान् कर्महीनान् करोति, अतो धनं प्राप्यापि पुरुषार्थ एव कर्तव्यः',

अर्थात् धन का स्वभाव है कि जहाँ यह इकट्ठा होता है उन जनों को निद्रालु, आलसी और कर्महीन कर देता है, इससे धन पाकर भी मनुष्य को पुरुषार्थ ही करना चाहिए।

कर्मकाण्ड में २३वें अध्याय के ३३ से ३८ मंत्र तक राजपत्नियाँ मृत घोड़े के अंगों को लोहे, चांदी और सोने की सुइयों से छेद-छेद कर जर्जर करती हैं। मंत्र है-

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सुचीभिः शम्यन्तु त्वा।। - यजु. २३/३३

इसका महीधरकृत अर्थ है- 'हे अश्व, गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पङ्क्त्या सह बृहती, उष्णिहा सह ककुप् एतानि छन्दांसि सूचीभिरेताभिः त्वां श्म्यन्तु संस्कुर्वन्तु। असिपथार्थ त्वग्भेदनं संस्कारः।'

अर्थात् हे घोड़े, गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप् पंक्तिसहित बृहती, उष्णिक्सहित ककुप् ये छन्द इन सुइयों से तेरा संस्कार करें। संस्कार का अभिप्राय है त्वचा को भेदना, जिससे तलवार घुसने का मार्ग बन सके। परन्तु स्वामी जी इस मंत्र में घोड़े को संबोधन न मानकर मनुष्य को सम्बोधन मानते हैं और यह अर्थ लेते हैं कि हे मनुष्यों, गायत्री, त्रिष्टुप् आदि छन्दों वाले वेदमंत्र तुम्हारे आपस के मतभेदों को उसी प्रकार सी दें, जैसे सुइयों से वस्त्र को सिला जाता है। इस मंत्र के भावार्थ में लिखते हैं-

'ये विद्वांसो गायत्र्यादिच्छन्दोऽर्थविज्ञापनेन मनुष्यान् विदुषः कुर्वन्ति, सूच्या छिन्नं वस्त्रमिव भिन्नमतान्यनुसंदधति ऐकमत्ये स्थापयन्ति ते जगत्कल्याणकारका भवन्ति।'

अर्थात् जो विद्वान् गायत्री आदि छन्दों के अर्थ को बताने से मनुष्यों को विद्वान् करते हैं और सूई से फटे वस्त्र को सीवें त्यों अलग-अलग मत वालों का सत्य में मिलाप कर देते हैं और उनको एक मत में स्थापन करते हैं, वे जगत् के कल्याण करने वाले होते हैं।

३६वें मंत्र का पूर्वार्ध है-

नार्यस्ते पत्न्यो लोम विचिन्वन्तु मनीषया ......।

महीधर इसका अर्थ करते हैं कि हे घोड़े, महिषी आदि राजपत्नियाँ मन से विचारकर तेरे शरीर के बालों को नोचें-

'हे अश्व नार्यः नृणामपत्यानि स्त्रियः ते तब लोम रोमाणि मनीषया मनसः इच्छया विचार्य विचिन्वन्तु पृथक् कुर्वन्तु। कीदृश्यो नार्यः? पत्न्यः यजमानभार्या महिष्याद्या इत्यर्थः।'

परन्तु स्वामी जी घोड़े के स्थान पर विदुषी अध्यापिका को सम्बोधन कर अर्थ करते हैं कि कुमारियाँ तीक्ष्ण बुद्धि से आपकी अनुकूल आज्ञा को एकत्र करें-

'नार्यः नराणां स्त्रियः ते तब पत्न्यः स्त्रियः लोम अनुकूलं वचनं विचिन्वन्तु संचितं कुर्वन्तु मनीषया मनस ईषणकर्त्र्या प्रज्ञया..। हे विदुष्यध्यापिके, कुमार्यो मनीषया ते लोम विचिन्वन्तु।'

अब जिन मंत्रों से चर्बी निकालने के घोड़े का पेट फाड़ा जाता है उनमें से एक मंत्र लेते हैं।

कस्त्वा छ्यति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति।
कऽउ ते शमिता कविः।। - यजु. २३/३६

महीधर के अनुसार घोड़े का पेट फाड़ने वाला कह रहा है कि 'हे घोड़े, प्रजापति तुझे काट रहा है (मैं नहीं), प्रजापति ही तेरी खाल अलग कर रहा है (मैं नहीं), प्रजापति ही तेरे अंगों को काटकर हविर्भाव को प्राप्त करा रहा है (मैं नहीं), वह मेधावी प्रजापति ही तेरा शमिता अर्थात् वध करने वाला है (मैं नहीं)'। देखिए, अपना पाप कैसी कुशलता से प्रजापति के ऊपर आरोपित किया जा रहा है। स्वामी जी ने इस मंत्र का निम्न भावार्थ लिखा है-

'अध्यापिका अध्येतॄन् प्रत्येकं परीक्षायां पृच्छेयुः। के युष्माकमध्ययनं छिन्दन्ति? के युषमानध्ययनाय उपदिशन्ति? केऽङ्गा नां शुद्धियोग्यां चेष्टां च ज्ञापयन्ति? कोऽध्यापकोऽस्ति? किमधीतम्? किमध्येतव्यमस्तीत्यादि पृष्ट्वा सुपरीक्ष्य, उत्तमानुत्साह्य अधमान् धिक् कृत्वा विद्यामुन्नयेयुः।'

अर्थात् अध्यापक लोग पढ़ने वालों के प्रति ऐसे परीक्षा में पूछें कि कौन तुम्हारे पढ़ने को काटते अर्थात् पढ़ने में विघ्न करते हैं? कौन तुमको पढ़ने के लिये उपदेश देते

हैं?कौन अंगों की शुद्धि और योग्य चेष्टा को जनाते हैं? कौन पढ़ाने वाला है? क्या पढ़ा? क्या पढ़ने योग्य है? ऐसे-ऐसे पूछ, उत्तम परीक्षा कर, उत्तम विद्यार्थियों को उत्साह देकर दुष्ट स्वभाव वालों को धिक्कार देके विद्या की उन्नति करावें।

२४वें अध्याय में कुछ पशु, कुछ जलचर जीव और कुछ पक्षी परिगणित किये गये हैं। कर्मकाण्ड के अनुसार जैसा पहले उल्लेख कर चुके हैं, ग्राम्य पशुओं को, जो संख्या में ३२७ बैठते हैं, २१ यूपों में बांधा जाता और बाद में उनका वध किया जाता है। २६० आरण्य जीवों को भी बाँधा जाता है, किन्तु इतना अन्तर है कि उन्हें बिना मारे देवताओं के नाम पर छोड़ दिया जाता है। परन्तु स्वामी दयानन्द इस सब इन्द्रजाल में नहीं पड़ते। उनका कथन है कि यह जन्तुओं का परिगणन इस दृष्टि से किया गया है कि मनुष्य उनसे यथायोग्य उपकार लेवें। प्रथम मंत्र में विषय-प्रतिपादन करते हुए वे लिखते हैं-

**'अथ मनुष्यैः पशुभ्यः कीदृश उपकारो ग्राह्य इत्याह'** अर्थात् मनुष्यों को पशुओं से कैसा उपकार लेना चाहिए इस विषय

का यहाँ वर्णन किया जाता है। पुनः २५ वें मंत्र के भाष्य में लिखते हैं- **'ये नाना देशसंचारिणः प्राणिनः सन्ति तैर्मनुष्या यथायोग्यानुपकारान् गृह्णीयुः'**, अर्थात् जो नाना देशों में विहार करने वाले प्राणी हैं, उनसे मनुष्य यथायोग्य उपकार लेवें। पशुओं के साथ जो एक-एक देवता का मंत्रों में उल्लेख है उसका अभिप्राय कर्मकाण्डी यह लेते हैं कि उस-उस देवता की तृप्ति के लिये उस-उस पशु का वध या उत्सर्ग किया जाता है। परन्तु स्वामी जी ११वें मंत्र के भाष्य में लिखते हैं कि **'या यस्य पशोर्देवता उक्ता स तद्गुणो ग्राह्यः'**, अर्थात् मंत्र में जो जिस पशु का देवता कहा गया है, उस पशु को उस गुण वाला समझना चाहिये। एवं अश्वमेध सम्बन्धी सारे प्रकरण की व्याख्या में स्वामी जी की दिव्य दृष्टि सर्वत्र दिखायी देती है।

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार
साभार- आर्ष ज्योति


आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

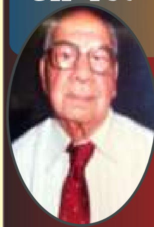

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

# महर्षि दयानन्द सरस्वती और सत्यार्थ प्रकाश से रोशन नवलखा महल

आर्य समाज के संस्थापक वेदों के प्रकाशपुंज सत्य का अवलंबन करने वाले, नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती देशव्यापी प्रचार करते हुए जब झीलों की नगरी, वीरों की यशस्वी गाथा को अपने में समेटे राजस्थान की धरा पर मेवाड़ की राजधानी उदयपुर के गुलाबबाग स्थित महाराणा सज्जन सिंह जी के राजनिवास नवलखा महल में १० अगस्त १८८२ को पधारे तो वह दिन भारत की वीरभूमि उदयपुर के लिए स्वर्णिम एवं गौरवशाली था, क्योंकि वहाँ स्वामी दयानन्द सरस्वती का १० अगस्त १८८२ से २७ फरवरी १८८३ ( छह माह बीस दिन) निरन्तर प्रवास रहा। इस प्रवास के दौरान ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन भी यहीं पर किया। स्वामी जी नित्यकर्म से निवृत्त होकर जब लेखन कक्ष

में पधारते थे तो सर्वप्रथम समाधिस्थ होकर ध्यान करते थे। उसके बाद सहज अवस्था में आने पर बोलकर लेखक को लिखवाते, जो लिखवाते थे उसको पुनः सुनते, फिर स्वयं भी देखकर आवश्यक होने पर संशोधन भी करते थे । तत्पश्चात् अपने हस्ताक्षर कर मुद्रण को भिजवाते थे। यह क्रम था सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ रचना का। इस ग्रन्थ में नवलखा राजमहल की स्मृतियाँ सजीव रूप से अन्तर्निहित हैं। १४ समुल्लास से सुसज्जित यह ग्रन्थ वेदों के ज्ञान से परिपूर्ण, मानवता को सजग प्रहरी के रूप में अभिप्रेरित करने और धर्म के सत्य को निरूपित करने वाला विश्व के पटल पर अद्‌भुत अलौकिक ग्रन्थ है। नवलखा राजमहल में स्वामी दयानन्द ने जिस कक्ष में बैठकर इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की आज वहाँ पर १४ खण्ड का काँच का घूमता हुआ सत्यार्थ प्रकाश कीर्ति स्तम्भ है। कक्ष में जब आगन्तुक प्रवेश करता है कीर्ति स्तम्भ धीरे-धीरे घूमता है तथा उस पर १४ समुल्लासों से उद्धृत स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रेरक वैदिक आप्त वचनों को उकेरा गया है जो मानव कल्याण का संदेश देते हैं। इसी कक्ष में आगे चित्रवीथिका है जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवनदर्शन के विभिन्न आयामों को दर्शाती संदेश विवरण से युक्त चित्रमालिका है। इसी वीथिका में महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक मिशन के संवाहक, अग्रणी आर्य संन्यासियों, वेद की आभा से दीप्तमान प्रकाण्ड

मनीषियों, उपदेशकों एवं ब्रह्मचारियों के चित्र हैं। जिनके नाम उनके संक्षिप्त विवरण सहित अंकित हैं। बरेली का भी सौभाग्य है कि उस चित्र वीथिका में शास्त्रार्थ महारथी पंडित बिहारीलाल शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवः एवं महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती के चित्र भी शृंखला में अलंकृत हैं। देश समाज तथा राष्ट्र के लिए जीवन का उत्सर्ग करने वाले क्रान्तिकारियों के चित्र भी प्रेरणा के स्रोत हैं। मेवाड़ की

वसुन्धरा के शौर्य की गाथा से भारत माता के ललाट को मान देने वाले महाराणाओं के चित्र भी सुशोभित हैं उनमें महाराणा सज्जन सिंह का चित्र विशेष है क्योंकि उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती से दीक्षा प्राप्त कर उनका शिष्यत्व ग्रहण किया था एवं विलासी जीवन त्याग कर वेदानुकूल सदाचारी जीवन अपनाया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों व निर्देशों को अपने राजकाज का, जनकल्याण के लिए अंग बनाया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा गठित परोपकारिणी सभा के प्रथम अध्यक्ष भी महाराणा सज्जन

सिंह थे।

चित्र वीथिका के पार्श्व में 'श्री सत्यनारायण गुलाबी देवी लाहोटी भव्य यज्ञशाला' बनी है जिसमें एक साथ

४००-५०० याज्ञिक बैठ सकते हैं। इसी के पार्श्व में 'साधना सदन' निर्मित है। जो एक सर्वस्वत्यागी संन्यासी के तप की गाथा गा रही है। वो थे माइन्स के व्यापार जगत् के भामाशाह श्री हनुमान प्रसाद चौधरी जो संन्यास लेकर

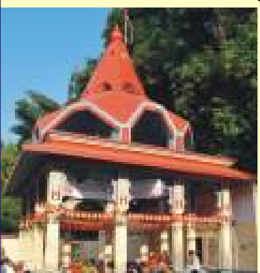

तत्वबोध सरस्वती के सुनाम से विख्यात् हुए। यज्ञशाला एवं साधना कक्ष से जुड़ी प्रेरक स्मृतियाँ उनके त्याग, तपस्या तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक मिशन को आगे बढ़ाने की जिजिप्सा का जीवन्त आख्यान है। स्वामी तत्वबोध सरस्वती का कार्यकाल १९९२ से २००४ तक नवलखा महल में अभीष्ट योगदान के रूप में रहा। इस अवधि में उन्होंने न्यास के अध्यक्ष के रूप में जो स्वप्न संजोये वे कर्मशील उत्तराधिकारी (मंत्री) श्री अशोक आर्य के अनुपम सहयोग से साकार हुए।

नवलखा राजमहल के भीतरी भाग में सुन्दर विस्तृत चौक है जिसमें ऋषि परम्परा से युक्त वेद मार्तण्ड महर्षि दयानन्द सरस्वती का भव्य चित्र, महाराणा सज्जन सिंह का चित्र, गुरुवर दंडी स्वामी विरजानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र, योगीराज कृष्णचन्द्र, आर्य समाज के चमकते सितारे स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, पंडित लेखराम, क्रांतिशिरोमणि स्वाभिमानी भारतमाता के वीर सपूत महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, वीरांगना लक्ष्मीबाई, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीदे आजम भगत सिंह, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद आदि के सजीव चित्र चौक पर चारों ओर प्रेरणापुंज के रूप में शोभायमान हैं। पर्यटकों के झुण्ड इन महापुरुषों के साथ 'सेल्फी' ले स्वयं को गौरान्वित अनुभव करते हैं।

प्रत्येक चित्र विद्युत प्रकाश से सुसज्जित है। चौक के बीच सतरंगी विद्युत तरंगों से युक्त शोभित गोलार्द्ध स्थल है। यहीं ऋषि महिमा के गीतों की धुनों पर रंगीन आभा बिखेरते हुए

संगीतमय फव्वारा थिरकता है। नवलखा महल दो मंजिला भवन है जिसमें अनेक अतिथि कक्ष हैं। एक सुन्दर सुसज्जित सभागार, पुस्तकालय, वाचनालय के साथ आधुनिक सुविधाओं से युक्त रसोईघर के साथ न्यास का सुसज्जित कार्यालय है जिसमें मान्यवर अशोक आर्य वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में न्यास की गतिविधियों का सुसंचालन करते हैं तथा 'सत्यार्थ सौरभ' मासिक वैदिक पत्रिका का सुयोग्य सम्पादन भी उन्हीं के द्वारा किया जाता है। दानवीर कर्मयोगी महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) न्यास के अध्यक्ष हैं। जिनके निर्देशन में न्यास प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इन्हीं के सहयोग से 'माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्र' निर्मित हो न्यास भवन में संचालित है तथा आर्य साहित्य बिक्री केन्द्र की भी स्थापना की गई है, जहाँ वैदिक साहित्य सुलभ है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा न्यास के न्यासी श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल के अर्थ सहयोग से निर्मित श्रीमती ब्रजलता आर्या

मल्टीमीडिया केन्द्र के माध्यम से प्रचार कार्य में डिजिटल क्रान्ति का सूत्रपात कर अनेक प्रकार से प्राचीन भारतीय संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने का श्रीगणेश कर दिया गया है। जिसका सम्पूर्ण विवरण इस आलेख में स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। उसकी महत्ता तो प्रत्यक्ष दर्शन में ही साकार हो सकेगी।

प्रतिवर्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का उत्सव भी नवलखा महल परिसर में भव्यता के साथ आयोजित किया जाता है। वर्ष २०१४ में ११ व १२ अक्टूबर को सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव एवं अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन और वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मान समारोह आयोजित किया गया था, जिसमें इस आलेख के लेखक रमेश चन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान आर्य समाज भूड़ बरेली व सेवक मूलचन्द्र आर्य को सहभागिता का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

**- रमेश चन्द्र गुप्त, बरेली**

# हमारा गौरव और विदेशी षड्यंत्र

**ऋषि** दयानन्द भारत की एकता व अखण्डता के पक्षधर थे। जब परतंत्र भारत में अंग्रेजों की सरकार ईसाई मिशनरियों को पूरा सहयोग दे रही है, धन बल भी मिल रहा है, स्थान स्थान पर मिशनरी के स्कूल चलाये जा रहे हैं जहाँ भारत के गौरव के विषय न होकर ईसाई मत की विचारधारा को ही थोपा जा रहा है। हिन्दुओं व अन्य भारतीयों को घिनौनी दृष्टि से देखा जा रहा है। कार्यालयों पर लिखा जाता था कि काले भारतीय व कुत्तों का प्रवेश वर्जित है। रेल व बसों में भारतीयों के लिए पीछे की सीटें दी जाती थीं, ऐसे में ऋषि दयानन्द ने भारत के प्राचीन गौरव को विश्व के सामने रखा। वेदों को 'गड़रियों के गीत' बताया जाता था। मैक्समूलर संस्कृत का अच्छा विद्वान् नहीं था उसने वेद मंत्रो का अर्थ ही विकृत कर अशुद्ध कर दिया। सायण, महीधर ने भी वेद मंत्रों को तोड़ मरोड़ कर अश्लीलता का रूप दिया। यह एक सोचा समझा षड्यंत्र भी हो सकता है। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय अपनी संस्कृति से घृणा करने लगें और ईसाइयत के रंग में रंग जायें अथवा ईसाई मत को ही मानने लगें। ऐसी बात नहीं कि यह कोई नई बात थी। आज भी भारतीय संस्कृति पर दाग लगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। ईसाई व अनेक मतावलम्बी अन्धविश्वासों विकृतियों को लेकर भारत में मतान्तरण का कुचक्र चला रहे हैं तथा भारतीय इतिहास तक को विकृत करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में भारत में फैले अन्धविश्वास पाखण्ड व विकृतियों पर ही सर्वप्रथम प्रकाश डाला है यदि हमारे समाज में विकृतियाँ चलती रहेंगी तो हमें ऐसे ही लूटा जाता रहेगा। हमें भ्रमित किया जाएगा, मतान्तरण होता रहेगा। ऋषि दयानन्द ने विश्वशांति का मार्ग बताया। जो अन्धविश्वास उस समय प्रचलित थे सभी का वर्णन किया और यही नहीं अन्य मतों में भी जो पाखण्ड पूर्ण असत्य विषय थे उन पर भी प्रकाश डाला। ऋषि दयानन्द ने भारत के गौरव को याद दिलाया। हम भूल रहे थे कि मान्धाता, मनु से लेकर अब तक भारत में चक्रवर्ती शासक हुए जिनका पूरे विश्व पर एकछत्र शासन था। यूरोप का राजा विडालाक्ष, अमेरिका जिसे पाताल लोक कहते हैं का बभ्रुवाहन, चीन का भगदत्त, ईरान का शल्य यहाँ महाभारत युद्ध में आज्ञानुसार आए थे। सिकन्दर जो दुनिया का महान् योद्धा था यहाँ धरती को सिर झुका कर वापस लौटा था। यही देश है जो प्राचीन काल में सभ्यता तथा संस्कृति में विश्व में सबसे ऊपर था अन्य देशवासी जंगलियों की भाँति रहते थे। न कोई सभ्यता विकसित थी न ही कोई संस्कृति ही थी जो श्रेष्ठ हो।

राम व कृष्ण आर्य थे। रघु, दिलीप, भोज, अश्वपति आर्य थे। आर्यों का धर्म व आचरण वेदानुसार था जो सृष्टि के आरम्भ से ही यहीं पर रहते आए। अब जो अंग्रेजों ने दुष्प्रचार करना आरम्भ किया कि आर्य भारत में यूरोप से आए यह उनका एक षड्यंत्र था कि भारतीयों की चेतावनी 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' पर वह कह सकते थे कि पहले आर्य बाहर से आए अतः आर्य भारत छोड़ें, इसलिए ही षड्यंत्र के अन्तर्गत यह कहना आरम्भ किया कि यहाँ आर्य भारत में बाहर यूरोप से आए। जबकि आर्य यहीं के हैं सदैव से यही के हैं। इसी षड्यंत्र में यह दुष्प्रचार भी किया गया कि राम व कृष्ण तो हुए ही नहीं उन्हें काल्पनिक बताया जाने लगा। वेदमंत्रों के अर्थ अश्लील करके भारतीयों के मन में वेदों के प्रति हीनता के भाव भरे जाने लगे और हमने उनकी कुटिल चाल पर ध्यान नहीं दिया। ऋषि दयानन्द ने वेद का प्रचार कर सत्यासत्य द्वारा, विवेक द्वारा दूध का दूध व पानी का पानी कर दिया एवं सत्य जानने का सूत्र हमें बता दिया। सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि का इतना सब साहित्य हमें भारत के गौरव को अवनत होने से बचाएगा, हमारी संस्कृति को लुटने से बचाएगा, हमारी सभ्यता को उन्नत बनाएगा और हमारे इतिहास के गौरव को याद दिलायेगा कि हम विश्व में ज्ञान

विज्ञान में, समृद्धि में, सभ्यता में, शासन प्रणाली में विश्व में श्रेष्ठ थे। यहाँ वैज्ञानिक आविष्कार हुए। विदेशी यहाँ शिक्षा लेने आते थे। गौतम, कणाद जैसे महान् विद्वान् यहाँ थे। मैत्रेयी, गार्गी, मदालसा जैसी महान् विदुषियाँ इसी धरा पर हुईं। यह धरती ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में आगे थी। कहीं कोई दुराचार व्यभिचार यहाँ न होता था। यहाँ सत्य व न्यायपूर्ण शासन था। विश्व के लोग यहीं शिक्षा प्राप्त करने आते थे। यह सब ऋषि दयानन्द ने ही हमें बताया और टूटे फूटे भारत को पुनः जागृति प्रदान की। विदेशियों ने भारत को कुछ समय तक बहुत लूटा विकृत किया। हम सब कुछ लुटा चुके थे, इतिहास को भुला चुके थे, ऋषि दयानन्द ने ही हमें हमारा अस्तित्व व गौरव पुनः याद दिलाया।

ऋषि ने ही बताया कि वैदिक धर्म सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बाँध सकता है यही मानवता का धर्म है। शांति का रास्ता है। यही मनुष्य को श्रेष्ठ बना सकता है। ऋषि व आर्य विद्वानों के वेद भाष्यों को हमें पढ़ना-पढ़ाना चाहिए सुनना व सुनाना चाहिए। जब तक विश्व श्रेष्ठ न बन जाए आर्यों का यह वेद प्रचार कार्य कभी न रुकने वाली एक क्रान्ति है, ज्वाला है। विदेशों व देश में हो रहे हमारी संस्कृति के विरुद्ध षड्यंत्रों से सावधान रहना होगा। उसके लिए वेद प्रचार करते रहें, यह हमारा कर्तव्य है।

**- डॉ. विजेन्द्रपाल सिंह**
**गली नं. २ चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा-२०३१३१**

## नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

ऋषि दयानन्द की कर्मस्थली नवलखा महल, उदयपुर आकर अपार खुशी हुयी। आपका प्रयास वैदिक संस्कृति एवं ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु नींव के पत्थर जैसा है। इसके लिए आपको कोटि-कोटि धन्यवाद। - आलोक सिंह, जयपुर

मुझे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश जिस स्थान पे लिखा गया वह स्थान देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निश्चित रूप से यह स्थान आनन्दमय, शान्तिमय एवं चिन्तनमय है। इस स्थान को बार-बार देखने की इच्छा होती है। - डी. शर्मा, गुजरात

मैं उदयपुर में कई स्थानों पर घूमने गया। लेकिन मुझे यह स्थान अत्यधिक अच्छा व शान्तिमय लगा। मानो काफी समय यहीं व्यतीत करते रहें। - गजेन्द्र, दिल्ली

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ७/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

**रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( चतुर्थ समुल्लास पर आधारित )- पुरस्कार प्राप्त करिये**

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श्य | | २ | त्रि | २ | | ३ | ह्म | ३ | |
| | ४ | ठ | | ५ | थे | | ६ स | | ६ | र ६ |
| ७ | त्र | ७ | ७ शी | ७ | | | | ८ | | च ८ |

**संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. गाय आदि पशुओं का पालन करना किस वर्ण का कार्य है?
२. सैकड़ों सहस्रों से भी युद्ध करने में अकेले को भय न होना किस वर्ण का गुण है?
३. विद्या और धर्म के प्रचार का कार्य किसको देना चाहिए?
४. विवाह कितने प्रकार का होता है?
५. गर्भस्थ शिशु की विशेष रक्षा कौन से महीने से आगे करनी चाहिए?
६. मन किससे पवित्र होता है?
७. वर्ण-व्यवस्था रखने से सब मनुष्य क्या होते हैं?
८. महाभ्रष्ट विवाह क्या कहलाता है?

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ५/१६ का सही उत्तर**

१. दुःख २. निकृष्ट ३. स्वयम्बर
४. अप्रसन्नता ५. स्त्री ६. असदृश
७. निष्फल

**"विस्तृत नियम पृष्ठ १३ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"**

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०१६

# वस्त से वैं^v स्ट (west) तक

डॉ. पूर्ण सिंह डबास

वस्त और वैंस्ट की चर्चा करने से पहले यदि वस् धातु पर थोड़ा विचार कर लिया जाए तो उचित होगा जो संस्कृत भाषा की एक प्रमुख धातु है और 'निवास करने, रहने, बसने तथा ठहरने' आदि की बोधक है। सं. में इस धातु से अनेक शब्द बनते हैं। प्रस्तुत विषय के स्पष्टीकरण के लिए उनमें से प्रमुख, शब्द, अर्थ सहित नीचे उद्‌धृत किए जा रहे हैं:-

१. वस= निवास, आवास

२.वसति= रुकना या ठहरना (विशेषकर 'रात्रिभर' के लिए), ठहराव, टिकाव, निवास स्थान, घर, रिहायश, घोंसला, रात्रि।

३. वसती= 'वसति', रुकना, ठहरना; रुकने का स्थान या घर, निवास= स्थान।

४. वसत= घर, आवास।

५. वसन= बसना, रहना, रुकने या ठहरने का भाव, रुकाव, ठहराव।

६. वसि= घर या वास= स्थान।

७. वसित= निवसन, वास; निवास, घर।

८. वसु= वास; निवासी।

९. वस्त= घर, गृह।

१०. वस्तव्य= (किसी में या किसी के साथ) रुका या ठहरा हुआ होना।

११. वस्तव्यता= निवास,वास-स्थान, घर

१२. वस्तु= (किसी का आसन या स्थान); जैसे कपिलवस्तु= कपिल का स्थान, व्रणवस्तु= (चोट या घाव का स्थान आदि); कोई पदार्थ या तत्त्व जिसका वास्तविक अस्तित्व हो; पदार्थ, चीज सामान, सम्पत्ति तथा विषय आदि।

इसी वस्तु पर सं. के वस्तुतः(=असल में, असली रूप में, तत्वरूप में); वास्तव (= असल, असली, यथार्थ); वास्तविक (= असली यथार्थ) तथा वास्तु (=घर का स्थान या नींव; स्थल, तल, भवन या वास- स्थान; घर, वासभूमि); वास्तुकर्मन्(=गृह-निर्माण; वास्तुशिल्प, स्थापत्य); वास्तुकाल (= गृह- निर्माण के लिए अनुकूल या उपयुक्त समय); वास्तु याग (= गृहनिर्माण से पहले किया जाने वाला यज्ञ) तथा वास्तु विद्या (= गृह निर्माण का विज्ञान, वास्तुकला, वास्तुशिल्प) आदि शब्द आधारित हैं।

१३. वस्त्य= घर, निवास, वास- स्थान।

१४. वस्मन्= घोंसला।

१५. वस्र= घर, आवास गृह।

प्रस्तुत संदर्भ में, उक्त शब्दों से, वसित, वस्त्य तथा वस्त विशेष ध्यान देने योग्य हैं जो कि घर या निवास स्थान के बोधक हैं। इस चर्चा को यहीं छोड़कर आइए, पहले अंग्रेजी के व्युत्पत्तिकारों द्वारा दी गई वैस्ट/west की व्युत्पत्ति पर विचार करें।

west की व्युत्पत्ति देते समय अंग्रेजी के विद्वान् प्राचीन अंग्रेजी से आगे नहीं जा पाते। उनके अनुसार प्राचीन अंग्रेजी में, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त यह शब्द, इसी रूप में मिलता है और वहाँ से मध्यकालीन अंग्रेजी में होते हुए आधुनिक अंग्रेजी में पहुँचा है। वैब्स्टर में यह अतिरिक्त जानकारी दी गई है कि अं. का west प्राचीन नॉर्वेजियन के vestr और प्राचीन उच्च जर्मन westar का सजातीय है। इसके आगे यह भी संभावना प्रकट की गई है कि हो सकता

है यह (west) लैटिन के vesper (= सांझ, सायँकाल) तथा ग्रीक के hesperos का भी सजातीय हो।

ऑक्सफोर्ड में केवल यह कहकर छोड़ दिया गया है कि इसका मूल स्रोत या उद्गम जर्मनिक भाषा परिवार में निहित है। कुल मिलाकर ये दोनों प्रसिद्ध कोश west की कोई संतोषजनक या प्रामाणिक व्युत्पत्ति नहीं दे पाए हैं। अंग्रेजी के प्रसिद्ध व्युत्पत्तिकार स्कीट भी इसका उद्गम ऐंग्लो सैक्सन (प्राचीन अंग्रेजी) के क्रिया विशेषण west (= पश्चिम की ओर) से बताते हुए डच भाषा के west आइसलैंडिक के Vestr डेनिश और स्वीडिश के vest तथा जर्मन के west को अंग्रेजी west के सजातीय शब्दों के रूप में उद्धृत करते हैं। यहाँ तक स्कीट का मत भी लगभग वैसा ही है, जैसा ऊपर उद्धृत कोशकारों का है। लेकिन स्कीट इससे आगे बढ़ते हुए कहते हैं कि अंग्रेजी का west सं. की वस् (= रहना, बसना, ठहरना) धातु पर आधारित सं.के वस्त (= घर, मकान) तथा वसति (=निवास स्थान, आवास; रात्रि) का समवर्गीय या इनसे संबद्ध है। इसके बाद स्कीट यह भी बताते हैं कि इस दिशा को (वस्त अर्थात्) west इसलिए कहा गया है क्योंकि इसे रात्रि विश्राम के लिए सूर्य का निवास या घर माना जाता था (The supposed place of abode of the sun at night)। इस विवेचन से स्पष्ट है कि अं. west का मूल ऊपर उल्लिखित सं. का वस्त है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उक्त वस् के समान संस्कृत की एक अस् धातु भी है जो 'होना, विद्यमान होना, अस्तित्व रखना, रहना, वास करना, बसना, ठहरना तथा रुकना' आदि की बोधक है। ग्रीक ऍस्-ति; लैटिन ऍस्-त; ग्रौथिक इस्-त; लिथुआनियन एस्-ति; वर्तमान अंग्रेजी का इज तथा हरियाणी सै; पं. सी, सन्, हन(भूतकालिक रूप) और हिन्दी तथा राजस्थानी का है आदि इसी अस् धातु पर आधारित है। वस् से जिस प्रकार ऊपर उल्लिखित वस्त तथा वस्त्य आदि बनते हैं उसी प्रकार अस् से 'घर या निवास के बोधक' अस्त, अस्तम्, अस्त्य तथा अस्तक आदि बनते हैं। घर के अर्थ में अस्त का प्रयोग ऋग्वेद तथा अथर्ववेद जैसे प्राचीनतम ग्रन्थों से ही मिलने लगता है। अस्त पर आधारित सं. के अस्तगमन, अस्तनिमग्न, अस्तमय तथा अस्तमान का अर्थ है 'सूर्य आदि प्रकाश पिण्डों के छिपने अर्थात् वहाँ जाकर टिक जाने या स्थित होने का भाव (setting)।' इनका मूल अर्थ होना चाहिए 'अपने घर में गमन या प्रस्थान'। कहने का अभिप्राय यह है कि भारतीय परम्परा में भी सूर्य के अस्त होने का मूल अभिप्राय है सूर्य का अपने अस्त या घर में जाकर विश्राम करना।

**एम- ९३ साकेत**
**नई दिल्ली ११००१७**
**मोबाइल- ०९८१८२११७७१**

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द)

# घड़ियाली आँसू

कई बार ऐसे अपराधी देखे गए हैं जो अपराधकर्त्ता के रूप में स्वयं को नकार कर जन सहानुभूति पाने के लिए नकली आँसू बहाते हैं। चर्चित आरुषि मर्डर केस में कोर्ट ने आरुषि के माता-पिता को दोषी पाया है। अगर यह सत्य है तो कहना होगा कि तलवार दम्पति तो घड़ियाली आँसुओं की नदी ही बहा चुके थे।

सदियों पुरानी कहावत है जिसके अनुसार यह माना जाता है कि दोहरे चरित्र वाले लोग नकली दुःख प्रकट करने के लिए जो शोक व्यक्त करते हैं अथवा आँसू बहाते दिखाई देते हैं उनके बारे में कह दिया जाता है कि वे घड़ियाली आँसू बहा रहे हैं। निश्चित रूप से समाज में ऐसे लोग हैं जिनको दूसरों को कष्ट में देखकर अथवा दूसरों का नुकसान देखकर, अथवा दूसरों के यहाँ हुई कोई गमी को लेकर मन ही मन तो खुशी होती है परन्तु अपनी भावना को दबाकर वे शोक संवेदना प्रकट करने का अभिनय करते हैं। इसी दोगलेपन को घड़ियाली आँसू बहाना कहा जाता है। यह कहावत क्यों प्रचलन में आई? उसका कारण है कि घड़ियाल अथवा मगरमच्छ जब अपना शिकार खाते हैं तो उनकी आँखों से आँसू बहते हुए दिखाई देते हैं। इस कारण से यह मान लिया जाता है कि यद्यपि वह शिकार को मार रहा था परन्तु उसे इसका दुःख भी था तभी तो मारते व खाते समय आँसू बह रहे हैं। फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के एक शोधकर्त्ता ने मगरमच्छों के एक फार्म में इस दृष्टि से एक अध्ययन किया तो उसने पाया कि मगरमच्छ जब अपने शिकार को खाता था तो उसकी आँखों से आँसू बहते थे। परन्तु शोधकर्त्ता वैज्ञानिक का कथन यह भी था कि इसका कारण मगरमच्छ की भावनाओं से बिल्कुल नहीं है। और यह कदापि सत्य नहीं है कि मगरमच्छ एक तरफ तो किसी का जीवन समाप्त कर रहा है और दूसरी तरफ पश्चाताप के आँसू बहा रहा है जिससे कि यह कहावत घड़ी गई। मगरमच्छ के आँसुओं का संभवतः कारण यही है कि शिकार खाने में जो अतिरिक्त नमक होता है वह एक प्रतिक्रिया के रूप में पानी के रूप में बाहर निकलता है।

रूस के एक वैज्ञानिक न्यूरोपैथोलोजिस्ट एफ ए.बोगोराड हुए हैं। उन्होंने मानव में भी कुछ ऐसे अध्ययन किए कि कभी-कभी किन्हीं-किन्हीं मानवों में इस प्रकार की बीमारी पैदा हो जाती है जिससे कि खाते समय उनके आँसू बहते हैं, इस बीमारी को 'बोगोराड सिण्ड्रोम' का नाम दिया गया।

यद्यपि मगरमच्छ के आँसू क्यों बहते हैं इसको लेकर के वैज्ञानिकों में कुछ मतभेद अवश्य हैं। कुछ तो मगरमच्छ में अश्रुग्रन्थि ही नहीं मानते परन्तु अधिकांश वैज्ञानिक मगरमच्छों में अश्रुग्रन्थि उपस्थित मानते हैं। उनका कहना है कि जब पानी से मगरमच्छ बाहर रहते हैं तो भी जिस प्रकार हमारे शरीर में आँखों को गीला रखने के लिए अश्रुग्रन्थि कार्य करती है ठीक उसी प्रकार अधिक समय तक पानी से बाहर रहने पर घड़ियालों की आँखों में भी आँसू आते हैं और वे बाहर बहते हुए भी दिख सकते हैं। जो भी हो यह तय है कि भावनाओं या पश्चाताप से मगरमच्छ के आँसुओं का कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः ये पश्चाताप या दुःख के आँसू नहीं हैं यह विशुद्ध रूप से फिजियोलोजिकल प्रक्रिया से जनित हैं। अतः वह कहावत आज भी प्रयुक्त की जा सकती है जो कि अब तक घड़ियाल के आँसुओं के लिए प्रयुक्त की जाती रही है।

# लुई पास्चर

आज यह प्रत्यक्ष है कि चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व अनुसंधान हो रहे हैं और बीमारियों को नियंत्रित करने की दिशा में अच्छी खासी प्रगति हुई है यह कहा जा सकता है परन्तु इस प्रगति के पीछे कितने लोगों ने अत्यन्त धैर्य के साथ, एक संकल्प लेकर अपने जीवन को आहूत किया है यह अवश्य दृष्टव्य है। लुई पास्चर भी ऐसे ही एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने रोग होने से पूर्व ही रोग को रोक देने की विधा (प्रिवेन्टिव मेथडोलोजी) के क्रान्तिकारी स्वरूप का प्रादुर्भाव किया। पास्चर के समर्पण की गहराई को एक घटना से समझा जा सकता है जब वे पागल कुत्ते के द्वारा होने वाली रेबीस बीमारी के नियंत्रण हेतु पास्चर वैक्सीन बनाना चाहते थे। भयंकर लार के साथ पागल कुत्ता एक पिंजरे में बंद था परन्तु उस लार को संग्रहीत कौन करे? यह विकट प्रश्न था। ऐसे में लुई पास्चर ने काँच की एक ट्यूब लेकर धीरे-धीरे सावधानीपूर्वक उस कुत्ते के मुँह से टपक रही लार को संग्रहीत किया। यह थी जीजीविषा मानव जाति को विनाश से बचाने की।

लुई पास्चर का जन्म १८२२ में नेपोलियन के फ्रांस में हुआ था। मूल रूप से वो एक रसायनशास्त्री थे। परन्तु धीरे-धीरे अपने सामने आने वाली चुनौतियों को निराकृत करने के क्रम में वे जीवाणुशास्त्री बन गए। कहा जाता है कि लुई पास्चर एक औसत विद्यार्थी थे परन्तु उन्होंने अपनी लगन, मेहनत, दृढ़ निश्चय के दम पर ऐसी उपलब्धियाँ हासिल कीं कि दुनिया आज उनको नमन करती है। वैक्सीन का सिद्धान्त प्रवर्तित करने वाले लुई पास्चर की देन से आज अनेक प्रकार की महामारियों पर नियंत्रण किया जा चुका है। परन्तु एक समय यह भी था कि लुई पास्चर की स्वयं की दो बेटियाँ हैजे की महामारी से काल कलवित हो गई थीं। लुई पास्चर ने रसायन विज्ञान में भी खोज की परन्तु उनकी 'जर्म थ्योरी' सर्वाधिक प्रसिद्ध हुई। एक समय वह था जब फ्रांस का मदिरा उद्योग भयंकर संकट का सामना कर रहा था। फ्रांस के मदिरा निर्माताओं की शराब कुछ ही दिनों में खट्टी हो जाती थी इसलिए उसका विक्रय बहुत गंभीरता के साथ प्रभावित हुआ। उन लोगों ने पास्चर से इस मुसीबत का हल ढूढ़ने का निवेदन किया। अपने अनथक परिश्रम से पास्चर ने पाया कि जीवाणुओं की वजह से मदिरा खट्टी हो जाती है। पर जब इन जीवाणुओं को मारने के लिए मदिरा को गर्म करते थे तो उसका स्वाद बिल्कुल खराब हो जाता था। निरन्तर इस पर कार्य करने से पास्चर ने पाया कि अगर ५५ डिग्री से.ग्रे. तक मदिरा को गर्म किया जाए और फिर ठण्डा कर दिया जाये तो जीवाणु भी खत्म हो जायेंगे व मदिरा का स्वाद भी नहीं बिगड़ेगा। उनकी इस खोज ने फ्रांस के मदिरा उद्योग को नया जीवन प्रदान किया। यही समस्या दुग्ध उद्योग के समक्ष थी। दूध भी अतिशीघ्र खट्टा हो जाता या फट जाता था। इसलिए उसका परिवहन संभव नहीं हो पा रहा था। पास्चर ने दूध पर भी उक्त प्रयोग को सफल पाया और जीवाणुओं को मारने की यह प्रक्रिया आज Pasteurization के नाम से ही जानी जाती है। सिल्क उद्योग के समक्ष भी संकट था कि रेशम के कीड़ों को कोई अनजाना रोग लग गया था तो पास्चर ने उन रोगी कीड़ों को पहचान कर अन्य कीड़ों से पृथक् करने की पद्धति विकसित की। संसार में सबसे पहले एन्थ्रेक्स नामक बीमारी का इलाज लुई पास्चर ने ही खोजा। यह बीमारी मुख्यतः मवेशियों में होती थी। यहीं से वैक्सीनेशन के मूल सिद्धान्त का विकास होना प्रारम्भ हुआ। पास्चर ने उन जीवाणुओं के कमजोर किए हुए समूह को स्वस्थ पशुओं में प्रविष्ट कराया तो वे मवेशी कुछ समय बीमार अवश्य हुए परन्तु मरे नहीं। इस सफलता से उत्साहित होकर पास्चर ने रेबीज को दूर करने के लिए कमर कस ली। उस समय यह बीमारी बहुत फैली हुई थी। अधिकतर लोग इससे प्रभावित होते थे। पास्चर ने एन्थ्रेक्स वाले सिद्धान्त के आधार पर ही रैबीज के विषाणुओं को संग्रहीत करके उनका एक अत्यन्त कमजोर स्वरूप विकसित किया और पशुओं में इससे सफलतापूर्वक उपचार किया। परन्तु मनुष्य पर इसका प्रयोग करने पर पास्चर के मन में हिचकिचाहट थी कि वहाँ यह सफल होगा या नहीं। एक समय उन्होंने अपने मन में निश्चय किया कि वे स्वयं को ही आगे लाकर रैबीज को अपने शरीर में प्रविष्ट कराकर रोग ग्रहण कर फिर स्वयं को इस पद्धति से रोग मुक्त करें। सौभाग्य से इसी समय में एक लड़का जिसे कि रैबीज ग्रस्त कुत्ते ने काटा था उनके पास लाया गया। लड़के के माता-पिता ने इस बात से सहमति प्रकट की कि पास्चर

अपनी नई तकनीक का प्रयोग उस पर करें। पास्चर ने उसका सफलतापूर्वक उपचार किया। उनकी टीम ने रातदिन एक करके तीन सौ पचास बीमारों को इस बीमारी से मुक्त कर स्वस्थ जीवन प्रदान किया। दस साल के काल में कहा जाता है कि एक लड़की को छोड़कर के बाकी सबको स्वास्थ्य लाभ हुआ। उस लड़की के यह बीमारी काफी फैल चुकी थी फिर भी पास्चर ने काफी कोशिश की, परन्तु वो लुई की बाहों में दम तोड़ गई। लुई की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने उस बच्ची के माता पिता को कहा कि काश मैं इसको बचा सकता। १८८८ में पास्चर की सेवाओं के सम्मान में पास्चर इंस्टिट्यूट की स्थापना की गयी। भाग्य की विडम्बना देखिये कि लुई पास्चर को लकवा मार गया और उनका बायाँ अंग बिल्कुल काम नहीं करने लगा। ऐसे में भी पास्चर ने अपनी हिम्मत नहीं हारी और अपनी पत्नी मैरी की सहायता से रात दिन शोध कार्य में लगे रहे। जिस सिद्धान्त का प्रवर्तन लुई पास्चर ने किया उसे आगे अन्य वैज्ञानिकों को जैसे फ्रेन्क लैण्ड रडोड, डुकलोक्स इत्यादि ने काम में लिया और टाइफस, डिप्थीरिया, हैजा, यलो फीवर इत्यादि भयंकर रोगों के लिए वैक्सीन तैयार की। लुई पास्चर को अगर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की शिला की स्थापना रखने वाला कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी।

प्रस्तुति- अशोक आर्य, नवलखा महल

घातक है जो देवता सदृश दिखता है,
लेकिन कमरे में गलत हुक्म लिखता है।
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा है,
समझो उसने ही हमें यहाँ मारा है।।
जो सत्य जानकर भी न सत्य कहता है,
जो किसी लोभ के विवश मूक रहता है।
उस कुटिल राजतंत्री कदर्य को धिक् है,
वह मूक सत्यहन्ता कम नहीं वधिक है।।

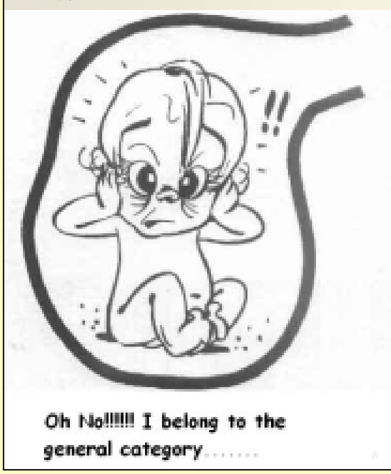


चोरों के हैं जो हेतु, ठगों के बल हैं,
जिनके प्रताप से पलते पाप सकल हैं।
जो छल प्रपंच सबको प्रश्रय देते हैं,
या चाटुकार जन से सेवा लेते हैं।।
यह पाप उन्हीं का हमको मार गया है,
भारत अपने घर में ही हार गया है।

कह दो प्रपंचकारी, कपटी, जाली से,
आलसी अकर्मठ, काहिल, हडताली से।।
सी लें जबान चुपचाप काम पर जाएँ,
हम यहाँ रक्त, वह घर में स्वेद बहायें।
जा कहो पुण्य यदि बढ़ा नहीं शासन में,
या आग सुलगती रही प्रजा के मन में।।
तामस यदि बढ़ता गया धकेल प्रभा को,
निर्बंध पन्थ यदि मिला नहीं प्रतिभा को।
रिपु नहीं यही अन्याय हमें मारेगा,
अपने घर में ही फिर स्वदेश हारेगा।।

- कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर'

## सर उसका सहला देना

साथी घर जाकर मत कहना,
संकेतों में बतला देना।
यदि हाल मेरी माता पूछे तो,
जलता दीप बुझा देना।
इतने पर भी ना समझे तो,
दो आँसू छलका देना।।
यदि हाल मेरी बहना पूछे तो,
सूनी कलाई दिखला देना।
इतने पर भी ना समझे तो,
राखी तोड़ दिखा देना।।
यदि हाल मेरी पत्नी पूछे तो,
मस्तक तुम झुका लेना।
इतने पर भी ना समझे तो,
मांग का सिन्दूर मिटा देना।।
यदि हाल मेरे पिता पूछे तो,
हाथों को सहला देना।
इतने पर भी ना समझे तो,
लाठी तोड़ दिखा देना।।
यदि हाल मेरा बेटा पूछे तो,
सर उसका सहला देना।
इतने पर भी ना समझे तो,
सीने से उसे लगा लेना।।
यदि हाल मेरा भाई पूछे तो,
खाली राह दिखा देना।
इतने पर भी ना समझे,
तो सैनिक धर्म बता देना।।

# समाचार

### रामनगर, खटीकरी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, रामनगर खटकरी सीतापुर का तीसरा वार्षिकोत्सव दिनांक १३ से१५ अप्रैल २०१६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित सदस्य चौ० रणवीर सिंह की गौरवमयी उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया। सहारनपुर से पधारे पं. शिवकुमार शास्त्री द्वारा श्रीराम के जीवन पर दिया गया प्रवचन बहुत ही प्रभावी रहा। आर्य समाज रामनगर खटकरी के प्रधान दर्शन लाल मिश्र ने सभी आगन्तुकों के प्रति आभार प्रकट किया। मंच संचालन रामेन्द्र आर्य ने किया।

### आर्य वीरांगना व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

दिनांक ३० मई से ५ जून तक ऋषि उद्यान, अजमेर में उक्त शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर की २३ वीरांगनाओं ने भाग लिया एवं जूडो-कराटे, लाठी, भाला संचालन व योग इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के समापन समारोह में विद्यालय के संचालक श्री सुरेश मित्तल, प्राचार्या कविता शर्मा, कैलाश चन्द्र, देवीलाल नायक, जीवन लाल इत्यादि ने अपनी गरिमामय उपस्थिति दी।

- कविता शर्मा

### सिंहस्थ उज्जैन २०१६ में आर्य समाज द्वारा प्रचार

सिंहस्थ उज्जैन २०१६ के अवसर पर आर्य समाज ने भी कैम्प लगाकर २२ अप्रैल से अपना प्रचार कार्यक्रम आरम्भ किया। आर्य समाज नागदा के धर्माचार्य डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने ध्वजारोहण किया। इस शिविर में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार किया गया। पूज्य स्वामी आर्यवेश, स्वामी आर्य तपस्वी एवं राजस्थान के लोकायुक्त माननीय जस्टिस सज्जन सिंह जी कोठारी की उपस्थिति व उद्‌बोधन उल्लेखनीय रहे।

- डॉ.अग्निवेश पाण्डे

### विजय पथ सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी के तत्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम 'विजय-पथ' में ३४ बालिकाओं ने भाग लिया एवं आत्म रक्षा, आत्म ज्ञान, आत्म विश्वास, संस्कार, सकारात्मक सोच व सम्प्रेषण कौशल पर विषय विशेषज्ञों से लाभ प्राप्त किया। राष्ट्र सेविका समिति की सह प्रमुख श्रीमती सरला गुप्ता ने चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों की प्रस्थापना पर सार्थक उद्‌बोधन प्रदान किया। अन्तर्राष्ट्रीय प्रेरक शिवा शर्मा ने पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन से सकारात्मक नजरिया, प्रभावी सम्प्रेषण, कौशल एवं लक्ष्य निर्धारण पर उद्‌बोधन प्रदान किया। आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

### क्रिकेट प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

उदयपुर जिला वेटरन क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के समापन समारोह में मुख्य अतिथि प्रमुख क्रिकेटर श्री संदीप पाटिल के सान्निध्य में जिला वेटरन क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र तायलिया द्वारा रणजी खिलाड़ी श्री विनीत सक्सेना का सम्मान किया गया। इस अवसर पर दर्शन डेन्टल कॉलेज के सभागार में कई पूर्व रणजी खिलाड़ी अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय अम्पायर उपस्थित थे।

### दयानन्द शिक्षा प्रसारणी सोसायटी के निर्वाचन सम्पन्न

रविवार दिनांक ८ जून २०१६ को सम्पन्न उक्त निर्वाचनों में संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया व श्रीमती शारदा गुप्ता, मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिन्धी अध्यक्ष श्री भंवरलाल आर्य उपाध्यक्ष श्री अम्बालाल सनाढ्य मंत्री श्री कृष्णकुमार सोनी कोषाध्यक्ष श्रीमती ललिता मेहरा एवं उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा का निर्वाचन सर्व सम्मति से हुआ।

सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आप सभी को हार्दिक बधाई।

### यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

उदयपुर नगर के हिरणमगरी निवासी श्री हीरालाल एवं श्रीमती मीरा शर्मा ने अपने निवास पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ रखा जिसको ब्रह्मा द्वय श्री शिवप्रकाश शास्त्री एवं श्री सत्यप्रिय शास्त्री ने सुचारू रूप से सम्पन्न करवाया। इसमें अनेक आर्यजनों ने भाग लिया। ५ जून से प्रारम्भ इस यज्ञ की पूर्णाहुति ७ जून २०१६ को हुई।

### डॉ. उत्तमायति जी बनीं आचार्य

साध्वी डॉ. उत्तमायति जी को भिनाय कोठी, अजमेर में आचार्य के रूप में नियुक्त किया गया है। इच्छुकजन कृपया अब निम्न पते पर उनसे सम्पर्क करें-

**महर्षि दयानन्द निर्वाण भवन**
**भिनाय की कोठी, आगरा गेट, अजमेर (राज.)**

## जोधपुर में आर्यवीर दल, प्रान्तीय योग व्यायाम प्रशिक्षण व व्यक्तित्व निर्माण शिविर सम्पन्न

उक्त शिविर २२ से २८ मई २०१६ तक शास्त्रीनगर,जोधपुर में

सम्पन्न हुआ। शिविर में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर के दस आर्यवीरों ने भाग लेकर विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया। विद्यार्थियों के साथ श्री कैलाश चन्द्र आर्य, जीवनलाल आर्यवीर, बाबूलाल जी आदि शिक्षकों ने भी भाग लिया।

## आर्य समाज मोहाली का १४वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मोहाली का वार्षिकोत्सव १२ जून १६ को फेज-२ में श्री विजय आर्य के घर के सामने के पार्क में मनाया गया। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र आहूजा के प्रवचन तथा सुश्री नम्रता सोनी व शिवकुमार शास्त्री के भजन हुए। मुख्य अतिथि श्री रमेश जीवन का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

- विजय आर्य

## गंगा दशहरा पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम में उत्सव सम्पन्न

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तदनुसार १४ जून २०१६ को गंगनहर के सुरम्य तट पर स्थित गुरुकुल प्रभात आश्रम में गंगा दशहरा का पावन पर्व

अतीव उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् गुरुकुल प्रांगण में पधारे विशाल जन समूह ने ब्रह्मचारियों के बौद्धिक कार्यक्रमों एवं भजनोपदेशकों के सुमधुर भजनों का रसास्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अन्त में पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि गंगा दशहरा का पावन पर्व हमें अपनी संस्कृति एवं सभ्यता में अटूट श्रद्धा एवं विश्वास बनाये रखने का सन्देश देता है। भगीरथ के कठोर तप से जिस दिन गंगा धरती पर आयी, उस दिन को गंगा दशहरा पर्व के रूप में मनाया जाता है। इससे हमारा इतिहास जुड़ा हुआ है। आज हमें अपनी उस धरोहर की सुरक्षा की आवश्यकता है। गंगा सुरक्षित हो, यही गंगा दशहरा पर्व मनाने का औचित्य है। कार्यक्रम के संयोजक डा. वाचस्पति मिश्र ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। विशाल भण्डारा एवं सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

- आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ

## श्री भूपेन्द्र शर्मा को भ्रातृशोक

उदयपुर नगर के उत्साही युवा आर्य, आर्यसमाज हिरणमगरी से.-४ के

उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा के अग्रज श्री कमलकान्त शर्मा का देहावसान दिनांक ६ जून २०१६ को हो गया।

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान तथा परिवारी जनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

## प्रतिस्वर

परम आदरणीय श्री अशोक जी आर्य, सादर नमस्ते

सत्यार्थ सौरभ का अप्रैल-१६ अंक पढ़ा। यूँ तो हर अंक पठनीय एवं संग्रहणीय होते हैं पर और अंकों से यह अंक अधिक मूल्यवान सामग्री लिए हुए है। श्रेष्ठ सम्पादन-प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- रामदयाल मेहरा, उदयपुर

## भव्य चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

पद्‌मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ के अधिष्ठाता, संन्यासी

साहित्यकार डॉ. ओम् आनन्द सरस्वती की प्रबल इच्छा शक्ति तथा शुभ संकल्प के परिणामस्वरूप १८ मई से २६ मई २०१६ तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, सीतावाड़ी, कोटा के निर्देशन तथा आचार्य नरेन्द्र वेदालंकार के ब्रह्मत्व में यह स्मरणीय कार्यक्रम निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुआ।

- डॉ. सीमा श्रीमाली

**विदुषी लेखिका 'सत्यार्थदूत' सरोज आर्या (जयपुर) की नवीनतम कृति 'मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का सरलतम उपाय-ब्रह्मयज्ञ'** मुद्रित हो चुकी है। पाठकगण लेखिका की शैली तथा वैदुष्य से परिचित हैं तथा उनकी नवीन रचना का इन्तजार करते हैं। सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान सदस्यों तथा ३१ अगस्त २०१६ तक जो भी नवीन सदस्य बनेंगे उन सभी को उक्त पुस्तक श्री ओ.पी. वर्मा, प्रधान आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर के सौजन्य से पूर्णतः निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

पुस्तक विवरण- ८.६x५.६ पृ. १२७, पेपरबैक।

शीघ्रातिशीघ्र सत्यार्थ सौरभ के सदस्य बनें और उक्त पुस्तिका निःशुल्क प्राप्त करें।

-सुरेश पाटोदी, व्यवस्थापक

## सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ५/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ५/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री किशनाराम आर्य, बीलू (राज.), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक, उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म. प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया, शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), श्री अमीत कुमार, झुन्झुनु (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी, बीकानेर (राज.), श्री वासुदेवभाई मगनलाल ठक्कर, बनासकांठा (गुजरात), श्री गोर्धनलाल झवर, आष्टा (म. प्र.), श्री नारायणलाल राव, उदयुपर (राज.), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल, सवाई माधोपुर (राज.)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य- पहेली के नए नियम पृष्ठ १३ पर अवश्य पढ़ें।**

# ये तो बड़ी ही अच्छी बात है

## कथा सरित

**सीताराम गुप्ता**

एक बार एक व्यक्ति एक गाय दान करना चाहता था। वह अपने गाँव के पास के एक आश्रम में गया और आश्रम प्रमुख से कहा, " महाराज, मैं आश्रम को एक गाय दान करना चाहता हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करेंगे तो बड़ी कृपा होगी।" आश्रम प्रमुख ने कहा, " ये तो बड़ी ही अच्छी बात है। गाय आ जाने से यहाँ रहने वाले विद्यार्थियों व अन्य आश्रमवासियों को दूध मिलने लगेगा।" गाय पाकर सभी आश्रमवासी प्रसन्न थे। कुछ दिनों के बाद गाय दान करने वाला व्यक्ति पुनः आश्रम आया और कहने लगा, " महाराज मैं अपनी गाय वापस लेने आया हूँ। यदि आप मेरी गाय वापस लौटा देंगे तो आपकी बड़ी कृपा होगी।" आश्रम प्रमुख ने कहा, " यह तो बड़ी ही अच्छी बात है।" ये कहकर उन्होंने बिना कुछ पूछताछ किए बड़े प्यार से गाय उसके पुराने स्वामी को लौटा दी।"

जब वह व्यक्ति अपनी गाय लेकर वापस चला गया तो आश्रम प्रमुख के एक शिष्य ने उनसे पूछा, "गुरूजी, जब वह व्यक्ति गाय दान करने आया था तब भी आपने ये कहा था कि ये तो बड़ी ही अच्छी बात है और आज जब वह व्यक्ति गाय वापस माँगने लगा तो भी आपने कहा कि ये तो बड़ी ही अच्छी बात है। गाय वापस देने से हम सब दूध से वंचित हो गए। इसमें कौन सी अच्छी बात है?" गुरूजी ने कहा, " देखो जब गाय आई तो दूध देती थी अतः इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी? गाय दूध देती थी तो गंदगी भी फैलाती थी और उसकी देखभाल भी करनी पड़ती थी। अब गाय वापस चली गई है तो अब हम सब आश्रमवासियों को गोबर की गंदगी व गाय की देखभाल से भी तो मुक्ति मिल गई है। अतः अब इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है?"

कुछ महीनों के बाद गाय दान करनेवाला व्यक्ति पुनः आश्रम में आया और कहने लगा, " महाराज मैंने गाय दान में देने के बाद उसे वापस लेकर अच्छा नहीं किया। मैं गाय को वापस देने आया हूँ, कृपया गाय को स्वीकार कर मेरी भूल को माफ़ करें।" आश्रम प्रमुख ने कहा, " ये तो बड़ी ही अच्छी बात है।" उन्होंने गाय को दोबारा आश्रम में रख लिया और अपने शिष्यों को उसकी देखभाल करने का निर्देश दिया। पता चला कि अब यह गाय दूध भी नहीं देती है। जब वह व्यक्ति गाय को आश्रम में छोड़कर वापस चला गया तो आश्रम प्रमुख के एक शिष्य ने प्रतिवाद करते हुए पूछा, "गुरूजी, अब यह गाय दूध भी नहीं देती है अतः किसी काम की नहीं है। अब मुफ्त में इसका गोबर उठाना पड़ेगा और सेवा करनी पड़ेगी। फिर भी आपने क्यों कहा कि ये तो बड़ी अच्छी बात है? अब इसमें भी कौन सी अच्छी बात रह गई है?"

'गाय की सेवा करनी पड़ेगी और इसका गोबर उठाना पड़ेगा तभी तो मैंने कहा कि ये तो बड़ी ही अच्छी बात है', आश्रम प्रमुख ने कहा। गाय दूध नहीं देती तो कोई बात नहीं। दूध के कारण गाय की सेवा करना तो सकाम कर्म की श्रेणी में आता है। अब यह दूध नहीं देती तो इसकी सेवा निष्काम कर्म की श्रेणी में आएगी। निष्काम कर्म से उत्कृष्ट कोई बात हो ही नहीं सकती। वैसे भी गौमाता की सेवा करना हमारे यहाँ धर्म माना जाता है। गाय की सेवा कर हम सहज ही धर्म में प्रवृत्त हो सकेंगे। दूसरे गाय के गोबर से तैयार खाद आश्रम के पेड़-पौधों व खेतों में डालने के काम आएगी। फिर कुछ दिनों के बाद जब यह गाय पुनः ब्याएगी तो दूध भी स्वतः सुलभ हो जाएगा।

वास्तव में किसी भी घटना के मुख्यतः दो पक्ष होते हैं एक सकारात्मक पक्ष व दूसरा नकारात्मक पक्ष। यह हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि हम किसी भी घटना को किस रूप में लेते हैं। उसका सकारात्मक पक्ष देखते हैं या नकारात्मक पक्ष। यदि हम हर घटना के केवल सकारात्मक पक्ष को ही देखते हैं तो हम जीवन में दुखों से बचे रहकर असीम खुशियाँ प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में सदैव प्रसन्न बने रहने का एकमात्र यही उपाय है कि हम घटनाओं के केवल सकारात्मक पक्ष को ही देखें और आशावादी बने रहें। किसी भी घटना में केवल प्रत्यक्ष अथवा वर्तमान लाभ देखना हमारी अल्पज्ञता, संकुचित दृष्टि व व्यावसायिकता का द्योतक है।

जब भी हम किसी घटना अथवा क्रियाकलाप को केवल लाभ की दृष्टि से देखते हैं तो उसमें हानि होने पर बहुत दुख होता है। जीवन में ऐसे ही अनेक दुखों का संग्रह करके हम महादुखी बने रहते हैं। जो व्यक्ति किसी भी घटना अथवा क्रियाकलाप को लाभ-हानि से ऊपर उठकर स्वीकार कर लेता है उन्हें हानि होने पर कोई पीड़ा या दुख नहीं होता लेकिन लाभ होने पर स्वाभाविक प्रसन्नता अवश्य होती है। लाभ-हानि से निरपेक्ष अथवा निःस्पृह होकर कार्य करने से लाभ होने पर अनेकानेक प्रसन्नता के अवसर हमारे जीवन की वास्तविकता बन हमें आनन्द व अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम होते हैं इसमें संदेह नहीं।

आगामी
सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
२१-२३ अक्टूबर २०१६
अवश्य पधारें।
अभी से मानस बनाएँ।
- सम्पर्क-
०९३१४२३५१०१
०९८२९०६३११०

ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४
चलभाष- ०९३१०१७२३२३, Email: srgupta54@yahoo.co.in

❑❑❑

## चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती पर विशेष

## स्वातन्त्र्य वीर चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती पर उन्हें समर्पित काव्याञ्जलि – मोनिका जैन 'पंछी'

गुलाम देश में भी जीता था
जो बन आजादी का परवाज
नहीं हुआ है, कभी ना होगा
कोई चंद्रशेखर सा आजाद।
सहनशीलता की पहचान
साहस का था दूजा नाम
माँ की आजादी के खातिर
सर्वस्व किया जिसने बलिदान।

जिसकी रग-रग में आजादी
बनकर खून बहा करती थी
जिसके जज्बे और हिम्मत की
चर्चा चहुँओर हुआ करती थी।
गोरों को भी डर लगता था
जिसके क्रांति अभियान से
जन-जन में अलख जगाई जिसने
निज प्राणों के बलिदान से।

आजादी जिसको अपने
प्राणों से ज्यादा प्यारी थी
जिसने अपनी सारी खुशियाँ
माँ धरती पर वारी थी।
उस भारत माँ के वीर सपूत को
मेरा शत-शत अभिनन्दन
देश की माटी जिसके मस्तक
पर सजती थी बन चन्दन।

# चिकित्सक का धर्म

**आयुर्वेद का उद्देश्य**

सुश्रुत संहिता में आयुर्वेद के पृथ्वी पर अवतरण होने का उद्देश्य 'लोक कल्याण' ही बताया है (सू.अ. १/५)। इन्द्र ने भी ऋषियों को बताया कि 'मुझे अश्विनौ ने यह आयुर्वेद अपने और प्रजा के कल्याण के लिये दिया था।

**आत्मनः प्रजानां चानुग्रहार्थं आयुर्वेदमश्विनौ मह्यं प्रायच्छताम्**

– चि.अ. १/४/४

सुश्रुत में भी इसी प्रकार कहा है कि 'मैं भी इस आयुर्वेद को प्रजाहित की कामना से दे रहा हूँ (**मया तु प्रदेयमर्थिभ्यः प्रजाहित हेतोः** सू.अ. १/२०)।

आयुर्वेद शास्त्र के दो ही उद्देश्य हैं, रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को रोग से मुक्त करना और स्वास्थ्य की रक्षा करना। (सु-सू.अ. १/१४; चरक-सू.अ. ३०/१६)।

इससे स्पष्ट है कि आयुर्वेद का उद्देश्य जन कल्याण, जन का हित करना ही है। इसलिये चरक संहिता में वैद्य-चिकित्सक के लिये यही शिक्षा है कि चिकित्सा व्यवसाय को सौदागिरी या बनिए की दुकान न बनायें। जो व्यक्ति चिकित्सा को अपनी रोटी का साधन 'सौदागिरी' के रूप में बनाते हैं- उनके लिये अत्रिपुत्र का कहना है कि 'शरण में आये, रोग से पीड़ित व्यक्ति से विद्वानों का वेश धारण करने वाले वैद्य को किसी प्रकार का अन्न, पान या वित्त नहीं लेना चाहिये'। (सू.अ. १/१३३)। गुरु शिष्य को ब्राह्मणों और वैद्यों के सामने उपदेश देता है कि 'तुझे सदा रोगियों को निरोग करने में प्रयत्न करना चाहिये। जीविका के साधन-वृत्ति के लिये उनसे झगड़ा नहीं करना चाहिये'। (वि.अ. ८)

**दो प्रकार के चिकित्सक ( वैद्य )**

चरक में दो प्रकार के वैद्य बताये हैं, एक प्राणाभिसर और दूसरे रोगाभिसर। इनके ही तीन भेद किये हैं, १. छद्मचर २. सिद्धसाधित और ३. वैद्य गुणों से युक्त जीविताभिसर। इनमें जो व्यक्ति वैद्यों के पात्र, औषध-पुस्त (मिट्टी के बने मॉडल या चित्र-शरीर रचना या रोग सम्बन्धी) को उड़ती निगाह से देखकर वैद्य बनकर बैठते हैं या इन वस्तुओं को एकत्रित करके वैद्यक का धन्धा करते हैं वे छद्मचर हैं। (अर्थात् नीम-हकीम) जो व्यक्ति श्री, यश और ज्ञान से प्रसिद्ध वैद्यों के नाम से अपने आप उनके समान न होने पर भी उनके नाम से वैद्य व्यवसाय करते हैं वे सिद्ध-साधित हैं; मैं अमुक गुरु का ही चेला हूँ; वे तो अब नहीं रहे उनके स्थान पर मैं ही हूँ इत्यादि बातें करते हैं- वे सिद्ध-साधित हैं। जो व्यक्ति प्रयोग-ज्ञान-विज्ञान सिद्धि में सफलता प्राप्त कर लोगों को आरोग्य रूपी सुख देते हैं; वे जीविताभिसर-सच्चे वैद्य गुणों से युक्त होते हैं; इनमें ही वास्तव में वैद्य (विद्ज्ञाने-ज्ञान को जानना) शब्द है। (सू.अ. ११/५०-५३)

**नीम हकीम**

नीम हकीमों के बारे में कहा गया है- न जानी हुई औषध विष, शस्त्र और बिजली के समान है; जानी हुई औषध अमृत के समान है। मूर्ख वैद्य से चिकित्सा की अपेक्षा ऊँची

जगह से सिर के बल गिरकर प्राण देना उत्तम है, आकाश की बिजली से सम्पूर्णतः जल जाना अच्छा है। आगे कहा है- दुःखी, शरण में आये; श्रद्धा रखने वाले रोगी को जो अहंकारी वैद्य बिना समझी औषध देता है; उस अज्ञानी, धर्म छोड़े हुए, मृत्यु रूप मूर्ख से बातचीत करने पर भी

मनुष्य नरक का भागी बनता है। साँप का विष खाना या ताम्र को उबालकर इसका विष पीना या आग में लाल किये लोहे के गोले खाकर प्राण दे देना कहीं अच्छा है।

### चिकित्सक के गुण

वैद्य को चाहिये कि वह अपने गुणों को एकत्रित करने में अतिशय प्रयत्नशील रहे जिससे कि वह मनुष्यों के लिए प्राणदाता बने। वैद्य के गुण-शास्त्र का भली प्रकार ज्ञान, बहुत बार प्रत्यक्ष रूप में चिकित्सा कर्म को देखना, चतुरता-प्रतिपत्ति (सूझ), पवित्रता (सत्यता-ईमानदारी) ये चार गुण वैद्य में होने चाहिये। जिस वैद्य में विद्या, तर्क बुद्धि, विज्ञान, स्मृति, तत्परता, क्रिया रहती है, उसके लिए साध्यरोग को अच्छा करना असम्भव नहीं।

रोग के कारण; लक्षण, रोग की शान्ति तथा पुनः रोग का न होना, यह चार प्रकार का ज्ञान जिसमें रहता है, वह राजा का वैद्य बनने योग्य है (सू.अ. ६/१६-२१)।

**वैद्य की वृत्ति** चार प्रकार की है- सब मनुष्यों में मैत्री, रोगी-दुःखी व्यक्तियों में दया, निरोगी-स्वस्थ व्यक्तियों में प्रीति और मृत पुरुषों में उपेक्षा रखनी चाहिये (सू. ६/२६)।

### चिकित्सक का जनता के प्रति कर्त्तव्य

वैद्य को चाहिये कि वह रोगियों को अपने पुत्र के समान देखे, यत्नपूर्वक रोगों से-दुःखों से उनकी रक्षा करे। महर्षियों ने आयुर्वेद का प्रकाशन धर्म के लिए ही किया है; अर्थ की कामना से या अन्य किसी इच्छा से नहीं किया। इसलिये जो व्यक्ति अर्थ और कामना को छोड़कर (निःस्वार्थ रूप से) केवल भूतदया के रूप में चिकित्सा करता है; वह सबसे अधिक उत्तम है- उसकी उपमा नहीं है। जो व्यक्ति रोटी के लिये चिकित्सा को बेचते हैं- सौदागिरी करते हैं, वे स्वर्ण की राशि को छोड़कर धूल की ढ़ेरी प्राप्त करते हैं। भयानक रोगों से खींचे जाते हुए, यमपुरी को जाते हुए लोगों को जो वैद्य यम के पाशों को काटकर जीवनदान प्रदान करता है उसके समान धर्म-अर्थ का देने वाला दूसरा इस संसार में नहीं है क्योंकि जीवनदान से बढ़कर दूसरा कोई दान नहीं। भूतदया को सबसे बड़ा धर्म मानकर, जो व्यक्ति चिकित्सा में उतरता है, वह सफल होकर अतिशय सुख को प्राप्त करता है।

### जनता का चिकित्सक के प्रति कर्त्तव्य

शीलवान्-बुद्धिमान, द्विजाति, शास्त्र में पारंगत वैद्य की पूजा गुरु की भाँति करनी चाहिए, क्योंकि वह प्राणाचार्य है। विद्या समाप्ति पर मनुष्य की दूसरी जाति कही जाती है (वह द्विजाति बनता है)। वैद्य पूर्वजन्म से नहीं होता, पिता के वैद्य होने से पुत्र भी वैद्य नहीं होता। विद्या समाप्ति पर ही मनुष्य में ब्रह्मत्व, ऋषित्व या सत्त्व गुण आता है। इसलिये वैद्य को द्विज कहा है। वैद्य के साथ कभी झगड़ा न करे, न उसकी निन्दा करे; उसका कभी अहित न करे, जो व्यक्ति वैद्य से चिकित्सा करवा के या न करवा के भी उसका उपकार नहीं करता उसकी मुक्ति नहीं कल्याण नहीं है (चि.अ. १/५१-५५)।

### अचिकित्स्य

जो लोग राजा से या महाजनों से (प्रतिष्ठित व्यक्तियों से) द्वेष करते हों या जिन लोगों से राजा या महाजन द्वेष करते हैं, उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति अतिशय निर्धन, अति दुष्ट, अतिशय दुःख का जीवन व्यतीत करते हों, जो कि वैद्य की हुई निन्दा का प्रतिकार नहीं करते; या जो मरणासन्न हो तथा उसके संरक्षक या पति पास में न हो उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये।

क्रोधी; साहसी (शक्ति से अधिक कार्य करने वाला); डरपोक; किए हुए उपकार को न मानने वाला; अन्य किसी काम में फंसा (जिसको चिकित्सा करवाने का समय नही); सज्जन-राजा और वैद्य जिससे द्वेष रखता हो; शोक से पीड़ित; अपनी मरजी से चलने वाला; मरणासन्न; श्रद्धाहीन; सब जगह वहम रखने वाला; वैद्य की आज्ञा न

मानने वाला-इनकी चिकित्सा न करे। इनकी चिकित्सा करने पर वैद्य को दोष (निन्दा) ही मिलता है। (सि.अ २/३/६)

वैद्यक चिकित्सा व्यवसाय एक पवित्र धंधा था। इस धंधे में दूसरे धंधे की भाँति छद्मचर वैद्य भी आ गये थे- आज की नहीं बहुत प्राचीन बात है। शुक्र नीति में आदेश है कि राजा की आज्ञा से ही वैद्यक-चिकित्सा करनी चाहिये।' चरक में भी यही कहा कि छद्म वेशी या दुष्ट वैद्य जो चिकित्सा करते हैं; वह राजाओं का ही प्रमाद है (राज्ञा प्रमादात् चरन्ति)।

चिकित्सा कर्म के लिये राजा की सनद या आज्ञा लेनी चाहिये, इसका उल्लेख सुश्रुत में भी है

**राजानुज्ञातेन विशिखाऽनुप्रष्टव्यः** - सूत्र.अ. १०/३

**सावधानी-** चिकित्सा व्यवसाय में कई बार रोगी के प्राणों का संशय सामने आ जाता है, इस अवस्था में सुश्रुत में राजा से आज्ञा लेकर कार्य करने को कहा है। चरक में इस समय के लिये-रोगी के सगे सम्बन्धी, जाति बन्धुओं को बुलाकर उनके सामने वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करके ही चिकित्सा करने में सन्देह है, चिकित्सा न करने में मृत्यु निश्चित है, यह समझाकर-राजा की आज्ञा लेकर चिकित्सा आरम्भ करने को कहा है (चि.अ. १३/१७७-८६) क्योंकि असाध्य रोगी या असाध्य रोग की चिकित्सा करने में वैद्य की मान प्रतिष्ठा तो नष्ट होती है, साथ में अर्थ और विद्या की हानि होती है, उसकी निन्दा होती है (सू.अ. १०/८)

**सफलता का प्रदर्शन-** चिकित्सा कर्म में जब सफलता मिले-विशेषतः खतरे पूर्ण कार्य में जब सिद्धि मिले तब उसका प्रदर्शन करने का भी विधान चरक संहिता में है यथा- भली प्रकार विरेचन वमन कराके रोगी में बल और वर्ण उत्पन्न करे उसे उसके स्वाभाविक बल और वर्ण से युक्त बनाये, जब उसका बल और वर्ण पूर्व की भाँति हो जाये, भली प्रकार नींद आये, खाया हुआ भोजन भली प्रकार पच जाये, तब सिर समेत स्नान कराके, शरीर पर चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यों का लेप कराके, माला पहिना कर, बिना फटा वस्त्र पहिना कर, योग्य अलंकार-भूषणों से शोभित करके, मित्रों को दिखाकर उसके जाति बन्धुओं को दिखाये इसके पीछे उसे काम करने की आज्ञा दे (अ. १५/१७)।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

## ''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

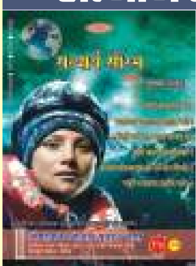

**अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।**

**पूर्ण विवरण पृष्ठ १३ पर देखें।**

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| एक लाख रु. | दस हजार | ७५००० | ७५०० |
| ५०००० | ५००० | २५००० | २५०० |
| १०००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

| भवानीदास आर्य | भंवरलाल गर्ग | डॉ.अमृत लाल तापड़िया |
|---|---|---|
| मंत्री-न्यास | कार्यालय मंत्री | उपमंत्री-न्यास |

सत्यार्थ-पीयूष

# एकतंत्र शासन के दोष

ऐतरेय ब्राह्मण (८/२८) तथा तैत्तरीय (१/७/८) के अनुसार राज्यारोह से पूर्व राजा को चारों वर्णों की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है।

प्राचीन काल में निर्वाचक मण्डल राजकृत, रत्नी तथा राजकर्त्ता के नाम से जाने जाते थे।

शतपथ में लिखते हैं-

**ता अस्मा इष्टाः प्रीता एतं सर्वमनुमन्यन्ते। ताभिरनुमतः सूयते यस्मै वै राजानो राज्यमनुमन्यते स राजा भवति न स यस्मै न।** (शत. ६/३/३/५)

वैदिक काल के 'राजकृत', ब्राह्मण काल में 'रत्नी' तथा रामायणकाल में प्रजा जन 'राजकर्त्ता' कहलाने लगे। राम और भरत का निर्वाचन इन्ही लोगों ने किया था। देखिए-

**समेत्य राजकर्त्तारो भरतं वाक्यमब्रुवन्।** (अयोध्या. ७६/१)

**समेत्य राज्यकर्त्तारः सभामीयुः द्विजातयः।** (अयोध्या. ६७/२)

**एकतंत्रीय शासन व्यवस्था का विरोध-** महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वेच्छाचारी राजा व एकतंत्र शासन के घोर विरोधी थे। उनका मंतव्य था कि राज्य में राजा तो होना आवश्यक है किंतु अवगुणों से युक्त स्वेच्छाचारी राजा का होना प्रजा के लिए घातक सिद्ध होता है। महर्षि ने अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में राजधर्म की व्याख्या करते हुए शतपथ ब्राह्मण का उदाहरण-

**राष्ट्रमेव विश्यहन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः।**

**विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं पशु मन्यत इति।।** देकर स्पष्ट किया है कि प्रजा को सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके देश का शासक स्वेच्छाचारी न हो। भाव यह है कि जैसे मृग खेत की फसल को खा जाता है, जैसे बाज (स्येन) नामक पक्षी अन्य छोटी चिड़ियों को आतंकित करता व उनका भक्षण कर लेता है तथा जैसे सिंह आदि शक्तिशाली मांसाहारी पशु अन्य दुर्बल पशुओं को जीवित नहीं रहने देते तथा मार कर उन्हें खा जाते हैं। ठीक उसी प्रकार एक स्वेच्छाचारी राजा अपने सुख व स्वार्थ पूर्ति के लिए प्रजा से उत्तम पदार्थों व धन-धान्यादि का येन-केन प्रकारेण आहरण करता रहता है, जिससे प्रजा का शोषण होता है। प्रजा में उत्तम पदार्थों का अभाव होने लगता है तथा वह सुखी व समृद्धशाली नहीं हो पाती।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में राजा-प्रजा धर्म विषय के अंतर्गत महर्षि ने स्पष्ट किया है कि 'राज्य के लिए किसी एक को राजा कभी नहीं मानना चाहिए क्योंकि जहाँ एक को राजा मानते हैं वहाँ उत्तम पदार्थों की कमी हो जाने के कारण प्रजा दुःखी हो जाती है, परिणामस्वरूप प्रजा की समृद्धि व उन्नति भी असंभव है।'

अतः महर्षि ने सामाजिक समृद्धि व सुव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए एकतंत्र शासन का घोर विरोध किया है। इस सम्बन्ध में कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं-

(१) प्रजा की साधारण सम्मति के विरुद्ध राजा वा राजपुरुष न हों। (सत्यार्थ प्रकाश ६ समुल्लास)

(२) जो राजा, प्रजा की सम्मति के अनुसार नहीं चलेगा उसके बारे में महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है-

**प्रभु स्वातन्त्र्यमापन्नो ह्यनर्थाच्चैव कल्पते।**
**भिन्न राष्ट्रा भवेत्सद्यो भिन्न प्रकृतिरेव च।।**

अर्थात् राजा अपने मत पर चले तो राष्ट्र में बड़े भारी अनर्थ का कारण होगा तथा राज्याधिकारी मण्डल और राष्ट्र उनके विरुद्ध हो जायेगा।

(३) क्योंकि विशेष सहाय के बिना जो सुगम कर्म है वह भी एक के करने में कठिन हो जाता है, जब ऐसा है तो महान् राज्य कर्म एक से कैसे हो सकता है? इसलिए एक को राजा और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य्य का निर्भर रखना बहुत ही बुरा काम है। (सत्यार्थ प्रकाश ६ समुल्लास)

**सम्पादक- अशोक आर्य**

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 | July-2016 | Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

# पूर्णकृपायुक्त जननी अपने सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. २१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय– श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक, उदयपुर